चन्दामामा
अक्तूबर १९७१

GOLD STAR
पीपरमींट
Peppermint

फ्लोराइड दांतों को खोखला होने से रोकता है कम से कम उम्र के ५० वें साल तक तो जरूर ही

(स्लेक और एलवीव द्वारा किया गया अध्ययन, १९५९)
रॉयल कॉलेज ऑफ सर्जन ऑफ इंग्लैंड के
वार्षिक वृत्तान्त के पेज ३०५ से लिया गया।
वर्ष ४५ अंक ५ नवम्बर १९६९

यही कारण है कि बिनाका टूथपेस्ट में फ्लोराइड मिलाया गया है।

क्योंकि सोडियम-मोनो-फ्लोरो-फॉस्फेट वाला बिनाका फ्लोराइड तीन तरह से दांतों की हिफाजत करता है और उन्हें खोखला होने से बचाता है;
यह इनेमल को मजबूत बनाता है। मुंह में नुकसान पहुंचाने वाले एसिड नहीं बनने देता। दंत क्षय रोकता है।
ये ऐसे गुण हैं जो हमें बिनाका फ्लोराइड इस्तेमाल करने के लिए मजबूर कर देते हैं।
बिनाका फ्लोराइड ऐसा टूथपेस्ट है जो बचाव में विश्वास रखता है इलाज में नहीं।
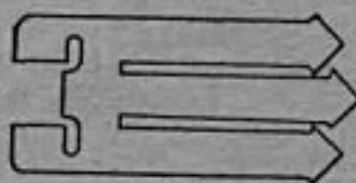
दंत-क्षय और दर्दनाक खोखलों से दांतों की तीन तरह से रक्षा करने वाला टूथपेस्ट—
बिनाका फ्लोराइड

CIBA Cosmetics

CF. 31 HN
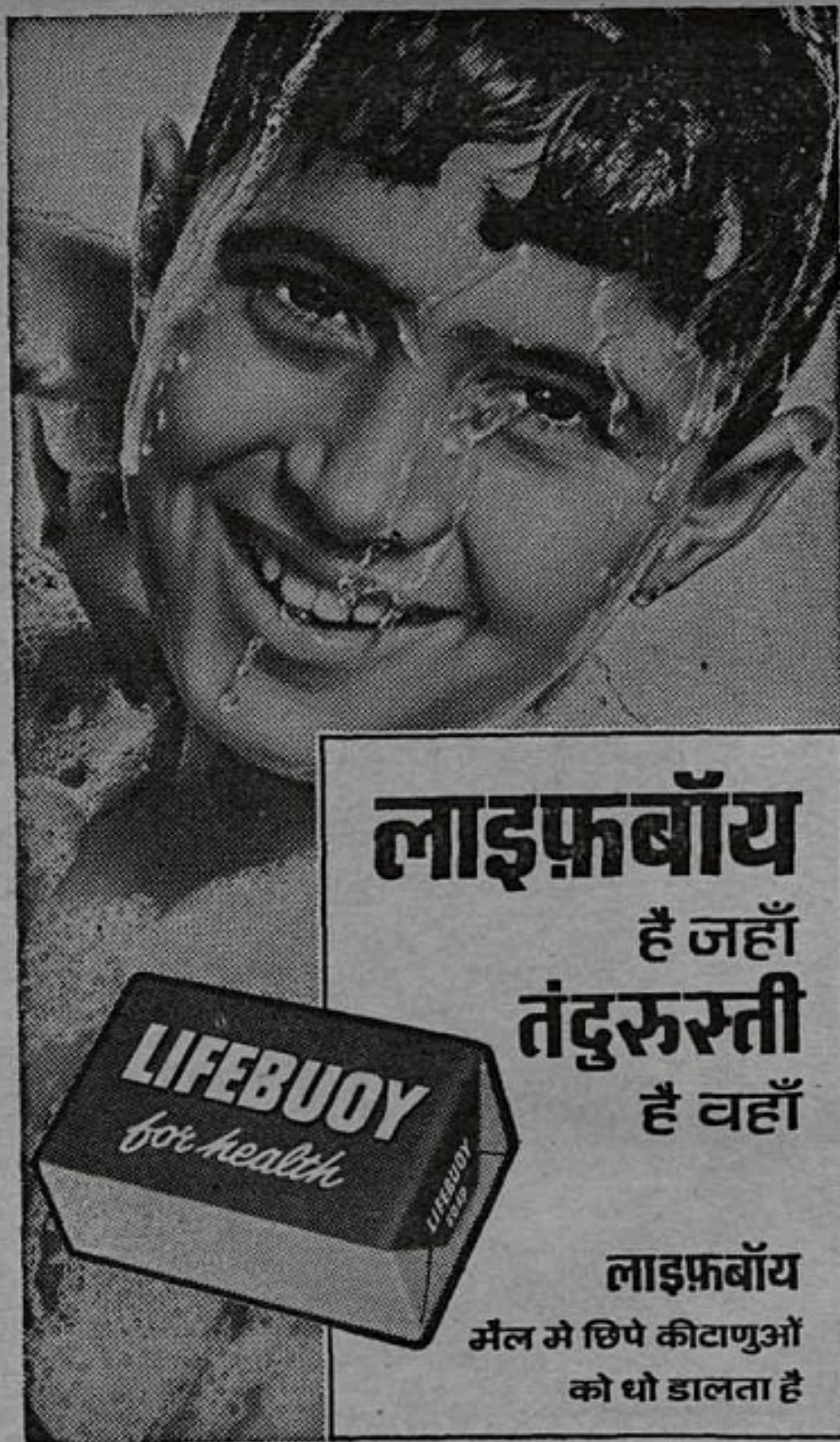
LIFEBUOY
for health
LIFEBUOY
लाइफ़बॉय
है जहाँ
तंदुरुस्ती
है वहाँ
लाइफ़बॉय
मैल मे छिपे कीटाणुओं
को धो डालता है
हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन
लिंटास- L. 60-77 HI

वह टॉनिक जो केवल
भूख बढ़ाती है अधूरा काम करती है
इन्क्रिमिन लीजिए... इस से बच्चे अधिक खाते हैं, अधिक बढ़ते हैं
इन्क्रिमिन-टोली में आकर...
बढ़ना सीखो भूख जगा कर!
इन्क्रिमिन* टॉनिक
Incremin drops
सभी कैमिस्टों के यहां प्राप्य
Lederle
* अमैरिकन सायानामिड कम्पनी का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क
लिंटास-INC. 20-537 HI

चन्दामामा
संचालक: चक्रपाणी
शासकों का केवल उत्तम कानून बनाने से प्रयोजन सिद्ध न होता, बल्कि उनके मूल में स्थित आशयों के आचरण का भी उन्हें ज्ञान होना चाहिये । 'मूकप्रेम' नामक कहानी में यह नीति है ।
शास्त्रीय ज्ञान अत्यधिक होने पर भी उसके साथ लौकिक ज्ञान तथा कल्पना शक्ति न हो तो, वह विशेष प्रकाश में नहीं आता । यह नीति हमें "दो ज्योतिषी" नामक कहानी के द्वारा विदित होती है ।
वर्ष : २४ अक्तूबर १९७१ अंक : २
CHITRA

न कस्यचि कश्चि दिहा स्वभावात् भव त्युदारो भिमतः खलोवा;
लोके गुरुत्वं विपरीततां वा स्वचेषिता न्येव नरं नयंति ॥ १ ॥

[इस संसार में कोई भी व्यक्ति केवल अपने स्वभाव से दूसरे की दृष्टि में अच्छा या खराब व्यक्ति नहीं कहलाता, बल्कि मनुष्य का बड़प्पन या नीचता उसके कार्यों के द्वारा आंकी जाती है।]

दारेषु किंचित्, स्वजनेषु किंचित्
गोप्यं वयस्येषु, सुतेषु किंचित्,
युक्तं न वा युक्त मिदं विचिंत्य
वदे द्विपश्चिन्महतो नुराधात् ॥ २ ॥

[कुछ ऐसी बातें होती हैं जो पत्नी, रिश्तेदार, मित्र और पुत्रों पर प्रकट नहीं की जा सकतीं। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति को चाहिये कि वह भले-बुरे का ख्याल रखते हुये बड़ों के दिखाये गये रास्ते पर चले।]

मृगा मृगैः संग मनुव्रजंति,
गावश्च गोभिः, तुरगास्तुरंगैः,
मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीभिः;
समान शीलव्यसनेषु सख्यं ॥ ३ ॥

[जानवर जानवरों से, गायें गायों से तथा घोड़े घोड़ों से मिल जाते हैं। मूर्ख मूर्खों से ही मिलते हैं तो बुद्धिमान बुद्धिमानों से मिलता है। इसलिए गुण और दोष समान हो तो मित्रता संभव है।]

सच्चा झूठ

एक गाँव में भोला और नीलू नामक दो आदमी अड़ोस-पड़ोस में रहा करते थे। भोला से नीलू की जमीन-जायदाद ज्यादा थी, इसलिए भोला मन ही मन नीलू से जलता था। उसने सोच-समझ कर नीलू को गाँव से भगाने का एक उपाय किया।

एक दिन रात को भोला ने अपने घर की क़ीमती चीज़ों को घर में कहीं छिपा रखा और एक-दो चीज़ें नीलू के पिछवाड़े में फेंक दीं। सवेरा होते ही भोला चिल्लाने लगा कि चोरों ने उसके घर को लूट लिया है।

भोला ने जिन चीज़ों की चोरी जाने की बात बतायी, उनमें से दो चीज़ें नीलू के पिछवाड़े में मिल गयीं। "मेरे घर नीलू ने ही चोरी की है।" भोला ने गाँव वालों के सामने आरोप लगाया। नीलू के पिछवाड़े में भोला की दो चीज़ें मिल गयी थीं, इसलिए गाँव वालों ने भोला की बात मान ली।

"मैं कुछ नहीं जानता।" नीलू ने चिल्ला-चिल्ला कर कहा। मगर उसकी बातों पर किसीने यक़ीन नहीं किया।

गाँव के पंचों ने भोला और नीलू को बुला भेजा।

"मैं सचमुच इस मामले के बारे में कुछ नहीं जानता। मेरी बात पर यक़ीन कीजिये।" नीलू ने अनेक तरह से समझाया।

"तो भोला की चीज़ें तुम्हारे पिछवाड़े में कैसे आ गयीं?" पंचों ने पूछा।

पंचों ने चोरी गयी चीज़ों की सूची ली और कहा—"हम दरियाफ़्त करेंगे। अब तुम लोग जा सकते हो।"

उसी दिन शाम को भोला किसी ज़रूरी काम से पड़ोसी गाँव में गया। उस रात

कैलाश मिश्र

को घर में भोला की पत्नी अकेली रह गयी। आधी रात को चोरों ने घर में घुस कर सारी चीज़ें हड़प लीं। उनमें वे चीज़ें भी थीं, जिन्हें भोला ने सावधानी से छिपा रखी थीं।

दूसरे दिन सवेरे भोला की पत्नी ने चिल्ला-चिल्ला कर कहा—"हाय भगवान, मेरा घर लुट गया।" यह ख़बर जल्द ही सारे गाँव में फैल गयी। पंचों ने भोला के घर जाकर उसकी पत्नी से चोरी गयी चीज़ों की सूची लिख ली। पिछले दिन भोला ने जिन चीज़ों के चोरी जाने की बात बता कर सूची दी थी, उस सूची को मिला कर पंचों ने देखा। वे सभी चीज़ें दूसरी सूची में भी थीं। पंचों ने असली बात जान ली और भोला की पत्नी से कहा—"कल भोला के घर लौटने पर हमारे पास भेज दो।" तब वे लोग चले गये।

पड़ोसी गाँव से लौटते ही भोला ने चोरी की बात जान ली और वह अपना सर पीटने लगा। उसने जिस चोरी का झूठमूठ नीलू पर इलज़ाम लगाया था, वे सारी चीज़ें सचमुच चोरी गयी थीं। वह सीधे पंचों के पास चला गया।

पंचों ने भोला से कहा—"परसों तुमने कुछ चीज़ों की चोरी जाने की बात बता कर एक सूची दी थी। कल रात को फिर चोरी जाने की बात बता कर तुम्हारी पत्नी ने एक और सूची लिखवा दी। लो, देखो, ये दोनों सूचियाँ। परसों जो चीज़ों चोरी गयीं, वे सब फिर कल कैसे चुरायी गयीं? इससे साफ़ मालूम होता है कि तुमने झूठमूठ नीलू पर चोरी का इलज़ाम लगाया है। इसलिए इस अपराध में तुम नीलू से माफ़ी माँग लो और जुर्माना उसे चुका कर इस गाँव को छोड़ कर चले जाओ।

भोला ने नीलू के साथ जो कुछ अन्याय कराना चाहा, वह उसी के साथ हो गया। उसकी सारी चीज़ें ही नहीं गयीं बल्कि इज़्ज़त भी खोकर वह गाँव छोड़ कर कहीं चला गया।

बनदेवी

एक गाँव में दो भाई थे। बड़ा भाई स्वार्थी था और छोटा भाई भोला था। कुछ समय बाद उनका पिता मर गया। बड़े भाई ने सोचा कि सारी जायदाद वह खुद ले और छोटे को खाली हाथ भगा दे। मगर गाँव के लोगों ने जब बड़े को डांटा तब उसने छोटे को मवेशी खाना बांट कर दिया। छोटा भोला था, इसलिए वह उसीसे संतुष्ट हो गया।

छोटा भाई कोई मजूरी और नौकरी करके जो कुछ मिलता उसीसे अपनी पत्नी और बच्चों का पेट पालने लगा। बड़े भाई अपने रुपये सूद पर देकर ब्याज से अपनी पत्नी को आराम से रखता था।

छोटे भाई की कमाई उसके परिवार के लिए काफ़ी नहीं पड़ती थी। इसलिए वह अपने भाई से जब तब उधार लेता था। वह कर्ज़ चुका नहीं पाता था, इसलिए मौक़ा पाकर बड़े भाई ने मवेशी खाना भी ले लिया और उस जगह एक बढ़िया मकान बनाने का विचार करने लगा।

एक दिन छोटे भाई को किसी जरूरी काम से जंगल के रास्ते एक गाँव में जाना पड़ा। वह उस गाँव में रात भर ठहरा, अपने काम के पूरा होते ही सवेरे उठ कर वापस लौट रहा था। सूर्योदय के होते होते वह एक तालाब के पास पहुँचा। उस तालाब में सोने के रंग की एक ही कमल की कली थी। छोटे भाई के देखते देखते उस पर सूरज की किरणें पड़ीं और तुरंत वह कली खिल गयी।

उस सुंदर सोने के कमल के फूल को देखते ही छोटा भाई मुग्ध हो उठा और उसने तुरंत उसे तोड़ डाला। उसी समय वहाँ पर एक नारी प्रत्यक्ष हुई।

वह देखने में देवता नारी लग रही थी, इसलिए उसने उस देवी को प्रणाम किया।

उस देवता नारी ने छोटे भाई से कहा—"इस तालाब में रोज़ एक फूल खिलता है। मैं इसे अपनी पूजा के काम में लाती हूँ। इसलिए तुम उस फूल को मुझे दे दो और बदले में तुम कोई वर माँग लो।"

छोटे भाई ने अपनी करनी पर पछताते हुए कहा—"देवीजी, मैंने यह फूल तोड़ दिया है। गलती मेरी है। इसके लिए मुझे वर ही क्यों दें, आप इस फूल को ले लीजिये।" इन शब्दों के साथ छोटे भाई ने सोने के उस कमल को देवी के हाथ दे दिया।

"तुम बड़े अच्छे आदमी हो! तुम्हारी अच्छाई पर खुश होकर मैं तुमको वर देना चाहती हूँ। तुम कोई वर माँग लो।" देवी ने कहा।

छोटा भाई थोड़ी देर तक सोचता रहा, तब बोला—"देवीजी, गरीबी से मेरे घर के सब लोग असंतुष्ट और परेशान हैं। मुझे ऐसा वर दीजिये जिससे हमें कभी भी कोई असंतोष न हो।"

"तुमने बड़ी बुद्धिमत्ता से वर माँगा है। मनुष्य जो भी वर माँगता है, तो अपनी संतुष्टि के लिए ही। तुम अगर कोई दूसरा वर माँगते तो तुम्हारे मन में यह असंतोष होता कि मैंने कोई दूसरा वर क्यों नहीं माँगा।" यह कह कर वह देवता नारी अदृश्य हो गयी।

छोटा भाई खुशी से घर लौट आया। उसके परिवार की जिंदगी में बड़ा परिवर्तन हो आया। वह जो भी चीज़ लाता वह घर-भर के लोगों को पर्याप्त ही नहीं होती, बल्कि उसमें थोड़ा-सा अंश बच जाता। उसके घर में किसी को किसी बात की असंतुष्टि न थी। इसके बाद वह अपने बड़े भाई से उधार माँगने नहीं गया, बल्कि सारा कर्ज़ भी चुका डाला।

अपने छोटे भाई को ख़ुशहाल देख बड़े भाई ने सोचा कि छोटे को कोई खज़ाना

मिल गया है। उसने यह भी सोचा कि छोटा भोला आदमी है, इसलिए सच्ची बात बता देगा। यह सोच कर वह छोटे के घर गया और बोला–"क्यों भाई, सब कुशल हैं न? तुमने मेरा सारा कर्ज चुकाया, फिर कभी कर्ज लेने नहीं आये? क्या बात है? मुझसे क्यों छिपाते हो?"

"बात कुछ नहीं भैया। जो कुछ है, उसीसे काम चल जाता है। उल्टे थोड़ा बहुत बच भी जाता है। हमें कोई कमी नहीं पड़ती।" छोटे ने जवाब दिया।

बड़े ने हँस कर पूछा–"मुझसे छिपाते हो? तुमको कोई खज़ाना मिल गया है। वरना आजकल कर्ज लिये बिना तुम्हारा गुजारा कैसे होता है?"

छोटे भाई ने अपने बड़े भाई से जंगल के तालाब के बारे में, सोने के कमल और बनदेवी के वर के बारे में सारी बातें सुनायीं।

सारी बातें सुन कर बड़ा भाई घर लौट आया और रात-भर यही सोचता रहा कि देवी से कौन-सा वर माँगना चाहिये। दूसरे दिन सवेरे सूर्योदय के पहले वह तालाब के पास पहुँचा। तालाब में सोने के कमल की एक ही कली दिखाई दे रही थी। सूरज की किरणों के पड़ते ही कली खिल गयी। तुरंत बड़े भाई ने उसे तोड़ डाला और ज़ोर से अपने दोनों हाथों से उसे जकड़ लिया। उसी समय वनदेवी आ पहुँची। उसने बड़े भाई के व्यवहार को

देख समझ लिया कि इस आदमी ने जान-बूझकर यह फूल तोड़ डाला है। उसने पूछा—"यह फूल मेरा है। इसे मुझे लौटा दो।"

बड़े भाई ने हँस कर कहा—"तुम मुझे वर दोगी तो यह फूल दूंगा, नहीं तो नहीं दूंगा।"

वनदेवी उसे घृणा की दृष्टि से देखते हुए बोली—"बोलो, तुम कौन-सा वर चाहते हो?"

बड़े भाई ने पहले ही सोच रखा था, इसलिए उसने झट कहा—"मैं जो कुछ सोचूं वह हो जाय।"

वनदेवी उसे वह वर देकर कमल ले गायब हो गयी।

बड़े भाई की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने कहा—"तालाब के किनारे के आम के पेड़ में फल लग जायें।" दूसरे मिनट पेड़ फलों से लद गया। उसने भर पेट फल खा लिया। घर जाकर कहा—"मेरा घर महल बन जाय।" तुरंत उसका घर महल बन गया। अब उसे किसी बात की कमी न थी, इसलिए घर भर के लोग दिन-भर मिष्टान्न और दावतें उड़ाने लगे।

उस दिन शाम को बड़े भाई की पत्नी अपने देवर और देवरानी को अपना बड़प्पन दिखाने के ख्याल से उनकी झोंपड़ी के पास पहुँची। संध्या के समय जब वह अपने घर लौट रही थी, तब बड़े भाई ने अपने कमरे में बैठे दालान की ओर देखा। उसे कोई काली आकृति दिखाई दी।

"बाप रे बाप! यह कोई भूत तो नही! भीतर नहीं आयगा न?" यह सोच कर बड़ा भाई डर गया।

तुरंत उसकी पत्नी भूत बन कर घर के अन्दर आ गयी।

"यह भूत शायद मुझे निगल डाले।" फिर यह सोच कर वह डर गया।

दूसरे क्षण भूत ने बड़े भाई को निगल डाला और कहीं भाग गया।

बड़े भाई के कोई संतान न थी, इसलिए वह महल और उसकी जायदाद छोटे को मिल गयी।
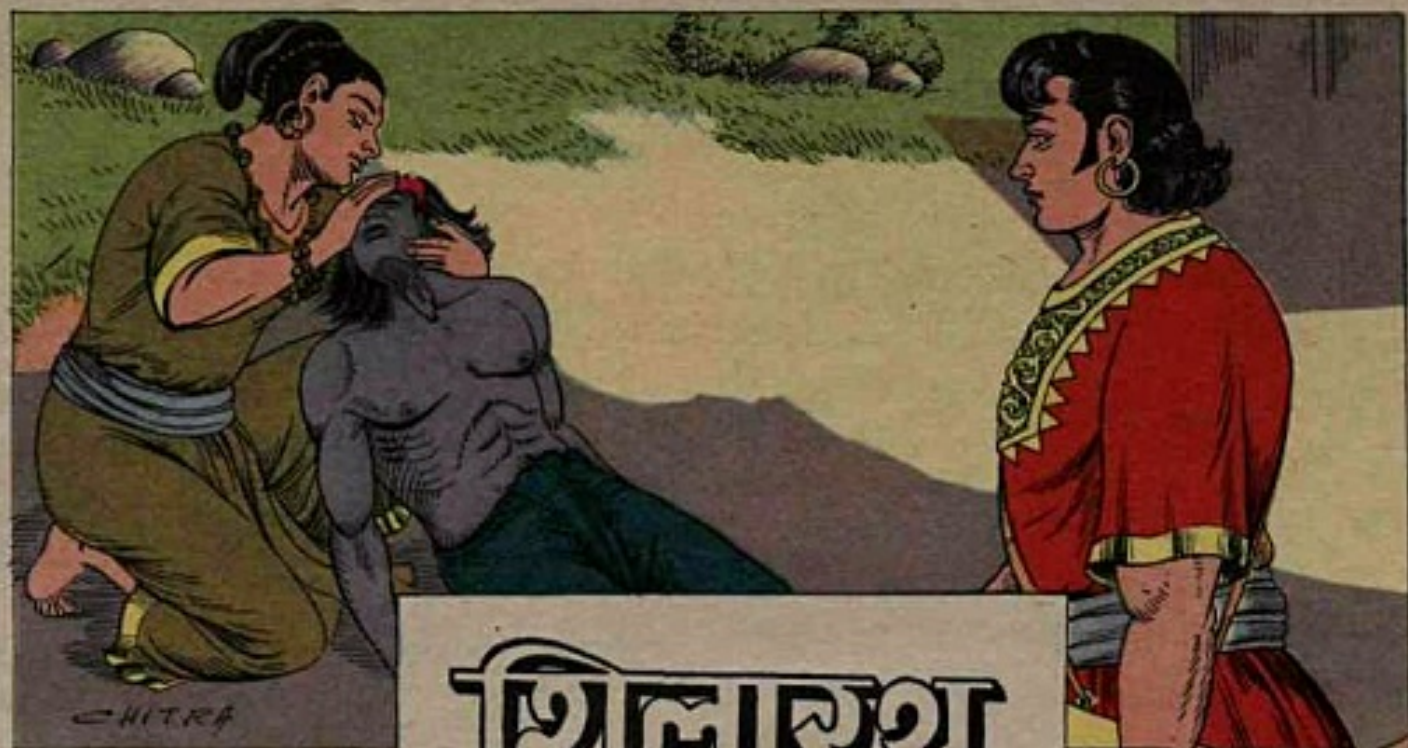
शिलारथ

[१२]

[खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को वसुदेव नामक गंधर्व ने रात को अपने महल में आतिथ्य दिया और दूसरे दिन सवेरे जीवदत्त के साथ द्वन्द्वयुद्ध के लिए तैयार हो गया। जीवदत्त ने उसे घोड़े पर से नीचे गिराया। वसुदेव की मदद के लिए उसका साला आ पहुँचा। खड्गवर्मा ने उसके सर पर तलवार की मूठ से दे मारा। बाद—]

वसुदेव ने देखा कि उसका साला खड्गवर्मा से चोट खाकर चिल्लाते नीचे गिर रहा है, तब वह ठठाकर हँसते बोला–"खड्गवर्मा, तुमने बड़ा अच्छा किया। तुम्हारी तलवार की चोट खाकर उसका सर फटा न होगा, क्योंकि वह पत्थर से भी ज्यादा कड़ा है।"

जीवदत्त को वसुदेव की बातों पर बड़ी हँसी आयी। मगर उसे परशुवाले युवक पर दया भी आ गयी। उसने उस युवक के निकट पहुँचकर उसकी चोट की जाँच की। चोट गहरी तो न थी, पर उसमें से खून बह रहा था।

"खड्गवर्मा, बेचारे इस युवक पर ऐसा कठोर प्रहार नहीं करना चाहिए था, उसे डरा देते तो ठीक होता! पहले हमें इसके खून को रोकना होगा।" इन शब्दों के साथ जीवदत्त जड़ी-बूटियों के वास्ते निकट

की झाड़ियों की ओर बढ़ा। उसी वक़्त वसुदेव की पत्नी वहाँ पर दौड़ आयी। उसने जीवदत्त की बातें सुनीं, तब खड्गवर्मा की ओर लाल-पीली आँखों से देखते हुए बोली—"क्या तुम्हारी बहादूरी दिखाने को यही एक अबोध मिल गया?"

"माफ़ करो बहन! तुम्हारा भाई भले ही अबोध क्यों न हो, मगर उसके हाथ का परशु बड़ा पैनी है। तुम अपने पति से पूछकर जान लो, अगर मैंने तुम्हारे भाई को न रोका होता तो मेरे मित्र का क्या हाल होता?" खड्गवर्मा ने कहा।

वसुदेव की पत्नी ने अपने पति की ओर क्रोध से देखा। इस पर वह और जोर से हँसते हुए बोला—"इसमें खड्गवर्मा का कोई दोष नहीं है। मैं तो देख ही रहा हूँ। उसे सावधान करने का वक़्त भी तो न था, इसलिए उसने तुम्हारे भाई के सर पर तलवार की मूठ का वार किया।"

"तुम हँसते ही क्यों हो? बेचारे मेरे भाई ने तुम्हारी मदद करने के लिए ही तो परशु उठाया?" वसुदेव की पत्नी ने पूछा।

वसुदेव को क्रोध आया। उसका चेहरा एकदम लाल हो उठा। वह अपने को कोसते हुए बोला—"यह सब मेरी बदनसीबी है! मैं गंधर्व हूँ, फिर भी मुझे तुम जैसी मानवी के साथ विवाह करना पड़ा। एक और मानव के हाथों में हारकर कमर तुड़वानी पड़ी।"

उसी समय जीवदत्त अपनी अंजुली भरकर कोई पत्ते और जड़ ले आया। उनका रस निचोड़कर परशुवाले युवक के घाव पर लेप किया।

"बहन, तुम्हारे भाई की जान के लिए कोई ख़तरा नहीं है। चोट पर पट्टी बांधने की भी ज़रूरत नहीं है। चोट के चंगी हो जाने के बाद औषध की परतें अपने आप झड़ जायेंगी।" जीवदत्त ने कहा।

इसके बाद वसुदेव के पास जाकर बोला—"वसुदेव, मैं तुम्हारी टूटी हुई कमर

का भी इलाज करूँगा। तुम एक घड़ी के अन्दर अपने टीलेवाले महल की सीढ़ियाँ चढ़ सकते हो! चौबीस घंटों के अन्दर तुम फिर शिकार खेलने जा सकते हो, इसलिए फ़िक्र मत करो।"

वसुदेव चकित हो जीवदत्त की ओर ताक रहा था। जीवदत्त और खड्गवर्मा ने पत्तों और जड़ों का रस निकाला, वसुदेव की कमर पर लेपन करके उसकी सीटी को मलकर पट्टी बाँध दी।

कुछ ही मिनटों में वसुदेव उन दोनों वीरों की मदद से उठ खड़ा हुआ और बोला—"भाइयो, यह बताओ, मेरे साले का क्या हुआ? वह बेहोश पड़ा हुआ है। जान का खतरा तो नहीं है न? यदि उसका कुछ हुआ तो समझ लो, उसकी बहन मेरी जान ही ले लेगी।"

"जान का कोई खतरा नहीं है! चोट खाकर उसका सर चकरा गया है। वह आराम की नींद सो रहा है, थोड़ी ही देर में वह हमारे पीछे चला आयगा। मदद के लिए उसकी बहन है। चलो, हम महल में चले जायेंगे।" जीवदत्त ने कहा।

वसुदेव लंगड़ाते चार क़दम आगे बढ़ाकर बोला—"जीवदत्त, तुम दोनों में तुम्हीं सरदार मालूम होते हो। पर अभी तक खड्गवर्मा मौन क्यों है? लगता है,

उसे जीभ की अपेक्षा तलवार से बात करना ज्यादा पसंद है?"

"दुश्मन से मैं बात नहीं करता, मेरी तलवार ही बात करती है। जीवदत्त में जो व्यावहारिक ज्ञान है, वह मुझमें नहीं है। इसके लिए मैं क्या करूँ?" खड्गवर्मा ने क्रोध से जवाब दिया।

"खड्गवर्मा, शांति के साथ बोलो। इस वक़्त वसुदेव हमारा दुश्मन नहीं है, बल्कि हमारा दोस्त है। यक्षों की धाक् से घबराकर उसके माँ-बाप विन्ध्यपर्वतों को छोड़ यहाँ पर भाग आये हैं। हम लोग उन्हें अपनी शक्ति और सामर्थ्य का परिचय देने के लिए ही वहाँ जा रहे हैं।

"जीवदत्त, यह बात तो सही है! मगर इसमें यक्षों से क्या मतलब है? हमें तो शिलारथ को हिलाना है, न कि यक्षों का संहार।" खंड्गवर्मा ने पूछा।

शिलारथ की बात सुनते ही वसुदेव चौंक पड़ा और ज़ोर से चिल्लाया–"क्या कहा, शिलारथ? विन्ध्यपर्वतों में स्थित शिलारथ को हिलाने जा रहे हो? अरे भाई, यह बात तुम लोग मुझसे पहले ही बता देते तो हमारे बीच यह झगड़ा न हुआ होता? और न इतना समय ही बरबाद होता?"

"जो हुआ, सो हो गया। अब भी

इसलिए यह हमारा मित्र बन गया है।" जीवदत्त ने समझाया।

ये बातें सुनकर खड्गवर्मा और वसुदेव भी अचरज में आ गये। दोनों थोड़ी देर तक सोचते मौन रह गये। इस बीच वे धीरे-धीरे महल की सीढ़ियों तक पहुँच गये। वसुदेव महल की निचली सीढ़ी पर पैर रखते हुए जीवदत्त की ओर देख बोला–"जीवदत्त, तुम दोनों विन्ध्याचल की ओर जा रहे हो? अच्छी बात है! मगर यक्षों का नाम लेते हो, बात क्या है?"

"हम दोनों एक महान कार्य को साधकर महावीर कहलाने के हेतु विन्ध्यपर्वतों में जा रहे हैं।" जीवदत्त ने कहा।

सही, हम नाहक़ वक़्त बरबाद किये बिना अपने कार्य में प्रवृत्त हो जायेंगे। चलो, जल्दी तुम्हारे विश्राम कक्ष में चले चलें। वहाँ पर सारी बातों पर हम आराम से चर्चा करेंगे।" जीवदत्त ने कहा।

"तब तो हम मेरे विश्राम कक्ष में नहीं, बल्कि मेरे आयुधागार में चलेंगे! यों तो वह नाम के वास्ते आयुधागार है, पर उसमें मेरे पूर्वजों के द्वारा संगृहीत अनेक अपूर्व वस्तुएँ पड़ी हुई हैं।" वसुदेव ने कहा।

इसके बाद वसुदेव खड्गवर्मा तथा जीवदत्त की मदद से सीढ़ियाँ पारकर महल के एक विशाल कक्ष के सामने जा

रुका। उस कमरे पर कुंड़ी चढ़ायी गयी थी, पर ताला न लगा था। किवाड़ों पर अनेक प्रकार के चित्र खुदे हुए थे। वसुदेव ने कुंड़ी निकालकर दोनों हाथों से किवाड़ों को ढकेल दिया।

कक्ष में अपूर्व वस्तुओं का संग्रह देख खड्गवर्मा और जीवदत्त अचरज में आ गये। उस कमरे में चारों ओर मोती और हीरे चमक रहे थे। दीवारों से लगकर अनेक प्रकार के हथियार रखे गये थे। दीवारों की खूंटियों पर विविध प्रकार के संगीत वाद्य लटक रहे थे।

"ये सारी चीज़ें मेरे पिताजी छोड़ गये हैं। मैं दुनिया से अलग इन पहाड़ों के बीच अपने दिन काटता हूँ, इसलिए मुझे इन चीज़ों की ज़रूरत नहीं रही, लेकिन यह बताओ कि तुमने शिलारथ का नाम लिया, क्या बात है?" वसुदेव ने पूछा।

"इसकी एक लंबी कहानी है। मगर मैं संक्षेप में बता देता हूँ। आराम से बैठकर सुनाऊँगा। इन गद्दों पर बैठ सकता हूँ न?" इन शब्दों के साथ जीवदत्त ने नक्काशी किये गये एक आसन की ओर संकेत किया।

"हम लोग आराम से बैठकर ही बात करेंगे। मुझे तुम लोगों से कुछ कहना है। बैठ जाओ।" इन शब्दों के साथ

वसुदेव ने खड्गवर्मा और जीवदत्त को दो आसन दिखाया और वह सामनेवाले एक और आसन पर बैठ गया।

जीवदत्त ने संक्षेप में यही बताया कि कैसे वे दोनों पद्मपुर के राजा से मिले और राजमहल में राजकुमारी पद्मावती ने एक शिलारथ की अनुकृति दिखाकर जो बताया कि उस रथ को हिलानेवाला ही महावीर है और वह उसके साथ विवाह करेगी।

"इसका मतलब यह है कि तुम लोगों ने शिलारथ को देख लिया है?" वसुदेव ने आश्चर्यपूर्ण स्वर में पूछा।

"हाँ, हमने देखा है, मगर वह असली रथ की प्रतिकृति थी। सुना है कि उसका

मूलरूप विन्ध्यपर्वतों में कहीं पड़ा हुआ है।" जीवदत्त ने जवाब दिया।

वसुदेव चुपचाप अपने आसन से उठ खड़ा हुआ। कमरे के एक कोने में पड़ी लकड़ी की पेटी में से एक चीज़ निकालकर खड्गवर्मा और जीवदत्त के पास आ पहुँचा। वह भी शिलारथ की प्रतिकृति थी, ठीक ऐसी ही थी जैसी चीज पद्मावती ने उन्हें दिखायी थी!

"यह चीज तुम्हारे हाथ कैसे लगी? हमने कुछ सप्ताह पहले इसे पद्मपुर की राजकुमारी के पास देखी?" जीवदत्त ने आश्चर्य के साथ पूछा। खड्गवर्मा शिलारथ और वसुदेव की ओर शंका भरी दृष्टि से देखने लगा।

"मैंने इस चीज़ को राजकुमारी के यहाँ से चुराया नहीं। कुछ दिन पहले एक चांदनी रात में मैं अपने महल की छत पर सो रहा था, उस वक़्त आसमान में मेघ की भांति हिलनेवाली एक काली आकृति ने मेरे पास गिरा दिया। इसमें रत्ती भर भी झूठ नहीं है।" वसुदेव ने कहा। इस पर खड्गवर्मा ने जीवदत्त की ओर मुड़कर कहा–"हाँ, वही कहानी है, जिसे हमने सुनी।"

"मैंने सोचा कि यह तो कोई कहानी होगी या मेरा भ्रम होगा, और यह सोचकर उससे बंधी चिट को पढ़कर उस पेटी में डाल दिया। मेरी पत्नी ने सोचा कि उस रात को मैंने हद से ज़्यादा जो शराब पी रखी थी, उसका असर होगा। इसलिए उसने इस पर बिलकुल विश्वास नहीं क़िया। उसका विचार है कि नशे की हालत में मैं शिलारथ की इस प्रतिकृति को अपने कमरे के किसी कोने से ले आया हूँ।" इन शब्दों के साथ वसुदेव हँसने लगा।

"उस चिट में क्या लिखा था? वह कहाँ है?" जीवदत्त ने घबराये हुए स्वर में पूछा।

"वह चिट कभी हवा में उड़ गया होगा। उसमें यही लिखा था कि दो

क्षत्रिय युवक इस टीलेवाले दुर्ग में आयेंगे तब में उनकी मदद करूँ।" वसुदेव ने कहा।

"ओह, हमने तो बहुत सारी बातें कीं। उस शिलारथ के पीछे और कोई गुप्त बात है। वसुदेव, तुम्हारी ही जाति का कोई व्यक्ति हमको प्रोत्साहित करके उस रथ को हिलाना चाहता है! पर इसका क्या कारण होगा?" फिर थोड़ी देर मौन रहकर बोला—"वसुदेव, अब हम चलते हैं।" इन शब्दों के साथ जीवदत्त उठ खड़ा हुआ। उसे देख खड्गवर्मा भी खड़ा हो गया।

"खाना खाकर तब जाओ! मेरी पत्नी शायद रसोई बनाने की तैयारी में है।" वसुदेव ने कहा।

इसके बाद तीनों कमरे से बाहर आये। सीढ़ियों के पास वाले कमरे में वसुदेव की पत्नी और उसका साला रसोई की तैयारी करते दिखाई दिये।

"हम चाहते हैं कि परशुवाला यह युवक हमें क्षमा करें।" जीवदत्त ने कहा।

युवक ने सर उठाकर जीवदत्त की ओर देखा और हँस पड़ा। उसकी बहन भी हँसते हुए बोली—"क्षमा करना क्या है, भाई साहब! उस चोट की वजह से मेरे भाई को मानों पूर्वजन्म की स्मृति हो

आयी है। यह कहता है कि तुम दोनों इसके मामा हों? सुनते हैं, यह कैसी विचित्र बातें बताता है!"

"इसमें आश्चर्य की बात क्या है? यह बात सत्य भी हो सकती है! मगर भानजे को इतने ज़ोर से खड़गवर्मा को मारना नहीं चाहिए था!" जीवदत्त ने कहा।

आध घंटे में रसोई तैयार हो गयी। सब ने खाना खाया। उस टीलेवाले दुर्ग से बाहर जाना हो तो जंगलवाले उस पेड़ के कोटर से ही जाना था। वसुदेव ने यह बात खड्गवर्मा और जीवदत्त को बतायी तथा उनकी मदद के लिए अपने साले को साथ भेजा।

खड्गवर्मा और जीवदत्त वसुदेव और उसकी पत्नी से विदा लेकर जाने ही वाले थे, तब वसुदेव अपने आयुधागार से एक कांसे की डंका लाकर उनके हाथ सौंपते हुए बोला–"मेरे पिताजी कहा करते थे कि इस डंके की बड़ी महिमा है। मगर इसका उपयोग करने का मौक़ा मुझे नहीं मिला। कहा जाता है कि इसे बजाने पर दुश्मन डर के मारे भाग जायेंगे।"

"कांसे की डंके की आवाज़ सुनकर भागने वाला दुश्मन भी क्या कोई दुश्मन होता है? ज़रूरत पड़ने पर मैं इसका उपयोग करूँगा, दे दो।" इन शब्दों के साथ जीवदत्त ने वसुदेव के हाथ से डंका ले ली।

इसके बाद वे दोनों मित्र परशुवाले युवक को साथ ले सुरंग के मार्ग से रेंगते हुए जंगल के उस विशाल वृक्ष के कोटर के पास पहुँचे। उन्हें कोटर के बाहर कुछ लोगों के वार्तालाप करने की ध्वनि सुनायी दी। खड्गवर्मा चुपचाप आगे बढ़ा और कोटर में से बाहर देखा। उनका पुराना दुश्मन महेन्द्रनगर के सेनापति का पुत्र तीस-चालीस सैनिकों को पेड़ के नीचे इकट्ठा करके उन्हें आदेश दे रहा था।

"देखते हो न! इस पेड़ के चारों तरफ़ किसी ने पहरा दिया है। इसके निशान साफ़ दिखाई दे रहे हैं। इसलिए यहाँ पर घास तक नहीं उगी। हमने गाँववालों से सुना भी है कि हत्यारे खड्गवर्मा और जीवदत्त इस प्रदेश में आये हैं। वे दोनों इस वृक्ष पर कहीं छिपे होंगे। तुम में से दो-चार लोग इस पेड़ पर चढ़कर कोटर, डाल और पत्तों के बीच उनको ढूंढ़ो।" सेनापति ने कहा।

उसका आदेश सुनकर दो सैनिक पेड़ पर चढ़ने की तैयारी करने लगे। खड्गवर्मा मुड़कर अपने साथियों से बोला–"सुनते हो न!" फिर वह तलवार निकालकर तैयार हो गया।

(और है)

मची हुई है, फिर भी तुम औरत की तरह अंत:पुर में बैठे हो ।"

इस पर क्रुद्ध हो शूरजित ने पुष्पावती का सर काट डाला। उसी समय शत्रु-सेना ने दुर्ग में प्रवेश किया। शूरजित भाग गया, मगर शत्रुओं ने उसे घेर कर मार डाला।

शूरजित चौंक कर नींद से जाग उठा। यह सब सपना था और वह भठियारिन के घर में खाट पर पड़ा हुआ था।

सवेरा होते ही शूरजित अपने देश को लौट आया। पिता के द्वारा निश्चित की गयी कन्या के साथ विवाह किया। पिता से राज-काज की शिक्षा ली। पिता के मरने पर वह बड़ी निपुणता के साथ राज्य का भार संभालने लगा।

बेताल ने यह कहानी सुना कर कहा– "राजन्, शूरजित ने पुष्पावती की खोज करना क्यों छोड़ दिया? क्या यह सोच कर डर गया कि सपने की बातें सत्य हो जायेंगी? या पुष्पावती पर से उसका मोह उतर गया? इसका समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमार्क ने उत्तर दिया– "शूरजित सपने की वजह से ही पुष्पावती के सौंदर्य पर मोहित हो गया था। सौंदर्य के द्वारा प्राप्त होने वाले आनंद और हानि का भी अनुभव उसने सपने में ही किया। अब पुष्पावती प्राप्त हो भी जाय तो उसके द्वारा पाने वाला कोई आनन्द न था। हम यह नहीं कह सकते कि सपने देख वह डर गया है। पुष्पावती की खोज करने से बचने का कारण यह कि उसके पिता ने पहले ही उसे हित की बातें समझायी थीं। यदि उस समय तक पुष्पावती के बारे में उसने सपना देखा होता तो वह अपने पिता की बातों पर अमल करता। पर अब सपने के प्रभाव के समाप्त होते ही उसने वह काम किया है।"

राजा के इस तरह मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

सज्जनता का दण्ड

बात उस समय की है जब बग्दाद पर खलीफ़ा हारूनल रशीद शासन करता था। एक दिन की रात को बड़ी कोशिश करने पर भी खलीफ़ा को नींद न आयी। उसने अपने अंगरक्षक मन्शूर को बुलाकर कहा—"तुम जल्द वज़ीर जफ़र को बुला लाओ। शायद वह मनोरंजन का कोई उपाय बता दे।"

मन्शूर जफ़र को बुला लाया। जफ़र ने घबरा कर खलीफ़ा से पूछा—"हुजूर, आपकी तबीयत खराब तो नहीं हुई है न?"

"मेरी तबीयत तो ठीक है, मगर मेरा मन विकल है। नींद नहीं आ रही है। मनोरंजन के लिए कोई उपाय करो।" खलीफ़ा ने समझाया।

"हमारे पुस्तकालय की कोई क़िताब शायद आपका मनोरंजन कर सके।" जफ़र ने जवाब दिया।

"तुमने खूब कहा, चलो, पुस्तकालय में।" खलीफ़ा ने कहा।

मन्शूर और जफ़र मशाल हाथ में लिये खलीफ़ा को रास्ता दिखाते राजमहल के पुस्तकालय में ले गये। खलीफ़ा ने कई किताबें निकाल कर देखीं और अंत में एक पुराने ग्रन्थ को निकाल कर चाव से पढ़ने लगा। पढ़ते-पढ़ते वह खिल खिलाकर हँस पड़ा। थोड़ी देर बाद उसकी आँखों से आँसू निकले। अंत में पुस्तक को हाथ में लिये सोने के लिए निकल पड़ा।

खलीफ़ा का हँसना और रोना देख जफ़र ने पूछा—"हुजूर! आप क्यों हँस पड़े और रोये ही क्यों?"

यह सवाल सुनकर खलीफ़ा एक दम नाराज़ हो गया और बोला—"नीच कहीं का? तुम्हें मेरे हँसने व रोने से क्या मतलब? तुमने पूछ लिया, इसलिए तुम

दत्तात्रेय शर्मा

ऐसे आदमी को मेरे सामने ले आओ, जो यह बता सके कि मैं क्यों हँसा? क्यों रोया? और इस पुस्तक में आदि से अंत तक क्या लिखा हुआ है? अगर तुम ऐसे आदमी को मेरे पास ला न सकोगे तो तुम्हारा सर कटवा दिया जायगा। तुमने मेरे काम में दखल दिया, इसलिए तुम्हारे लिए मैं यही सजा देता हूँ।"

"हुजूर? मुझ से अपराध हो गया। मुझ जैसे छोटों का अपराध करना और आप जैसे बड़ों का क्षमा करना सहज ही है।" जफ़र ने निवेदन किया।

"यह सब नहीं चलने का। तुमको मैं किसी भी हालत में माफ़ नहीं कर सकता। यह फ़ैसला कर लो कि मैं जैसे व्यक्ति को चाहता हूँ, वैसे व्यक्ति लाओगे या अपना सर कटवा लोगे?" खलीफ़ा ने कड़क कर पूछा।

"आप जैसे व्यक्ति को चाहते हैं, उसे लाने के लिए कम से कम मुझे तीन दिन की मोहलत दीजिये।" जफ़र ने बिनती की।

"अच्छी बात! मैं तुमको तीन दिन की मोहलत देता हूँ।" खलीफ़ा ने कहा।

खलीफ़ा से विदा लेकर जफ़र घर लौट आया। उसने सारी बातें अपने बाप और भाई को सुनाकर कहा—"खलीफ़ा मेरी

जान का काल बन गया है। अब इस शहर से भाग जाने के सिवा मेरे सामने दूसरा कोई रास्ता नहीं है। कहीं दूर देश में जाकर अपने दिन बिताऊँगा।"

"तब तो तुम दमस्कस चले जाओ। वहाँ कुछ दिन रहो, यहाँ की हालत सुधर जाने पर फिर लौट सकते हो।" जफ़र के बाप ने सलाह दी।

जफ़र अपने साथ एक हज़ार दीनार ले खच्चर पर सवार हो रेगिस्तान के रास्ते चल पड़ा। दस दिन की यात्रा के बाद वह दमस्कस शहर में जा पहुँचा। शहर के निकट पहुँचते ही खच्चर से उतर पड़ा और उसे हाँकते गली-कूचे तथा घर और

मसजिद देखते चला ही जा रहा था कि उसे एक बहुत बड़ा महल दिखाई दिया। उसके चारों तरफ़ उद्यान और उद्यान के बीच एक रेशमी डेरा दीख पड़ा। डेरे के भीतर सुन्दर कालीन बिछी थी। गोल तकिये और गद्दे भी लगे थे। डेरे के बीच पूर्ण चन्द्रमा जैसे एक युवक गुलाबी रंग के वस्त्र पहने बैठा था। उसके सामने कुछ मेहमान बैठे शराब का सेवन कर रहे थे। युवक के पास एक युवती बैठे किन्नरी बजाते गा रही थी।

जफ़र उस दृश्य को देखते, संगीत की स्वर लहरियों पर मुग्ध हो खड़ा ही रह गया। उसे देखते ही डेरे में बैठा युवक झट उठकर ठीक से बैठ गया और एक गुलाम को बुलाकर आदेश दिया—"तुम जल्दी बाहर खड़े उस युवक को बुला लाओ। कोई दूर देश से आया मुसाफ़िर मालूम होता है।"

गुलाम जफ़र के पास दौड़कर चला गया और उस युवक को अन्दर आने का निमंत्रण दिया। जफ़र ने अपने कच्चर को उस गुलाम के हाथ सौंप दिया और वह डेरे के भीतर चला गया। उसे देखते ही भीतर बैठा युवक उठ खड़ा हुआ। आगे बढ़कर उसका स्वागत करते हुए बोला—"अल्लाह की मेहबानी है कि आप यहाँ पर आये। मेहर्बानी करके बैठ जाइये।"

युवक ने जफ़र के साथ जो आदर भाव दिखाया, और उसकी जो मेहमाननवाजी

सपने का असर

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा, तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन्, तुम्हारी हिम्मत और लगन प्रशंसनीय है। बहुत समय पहले शूरजित नामक राजकुमार, ज़ो बड़ा वीर भी था, सपने देख घबरा गया था। श्रम को भुलाने के लिए मैं तुमको उसकी विचित्र कहानी सुनाता हूं, सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: सुधीर नामक राजा बड़ी ईमानदारी से अपने देश पर शासन करता था। उसमें किसी भी प्रकार के अवगुण न थे और वह अपनी प्रजा के हित के वास्ते दिन-रात मेहनत किया करता था और प्रजा को अपनी संतान की तरह मानता था। उसके एक ही पुत्र था, जिसका नाम शूरजित था।

वेताल कथाएँ

शूरजित जब विवाह के योग्य हुआ, तब तक उसने समस्त प्रकार की विद्याएँ सीख लीं और वह एक बड़ा वीर कहलाने लगा। वह लगनशील था, शासन के कार्यों में भी वह अपने पिता से बढ़ कर योग्य मालूम होता था।

एक दिन शूरजित शिकार खेलने गया। लौटने पर थकावट के मारे सो गया। उसने नींद में एक सपना देखा।

उस सपने में वह एक घने जंगल में शिकार खेलते खेलते अपने दल को छोड़ बहुत दूर चला गया। इस तरह वह अपने राज्य की सीमा पार कर पड़ोसी राज्य की सीमा में पहुँच गया।

शूरजित को नज़दीक कोई कोलाहल सुनायी दिया। उसने उस दिशा में अपना घोड़ा बढ़ाया। एक जगह ज़मीन पर पालकी रखी हुई थी, कुछ नारियाँ पालकी के समीप खड़ी थीं। दूसरी ओर कुछ सिपाही डाकुओं से लड़ रहे थे।

शूरजित से यह दृश्य देखा नहीं गया। वह वीर तो था ही, इसलिए तुरंत उसने तलवार निकाल कर डाकुओं पर आक्रमण किया और पल-भर में उनको भगा दिया।

इस पर सिपाहियों ने शूरजित से कहा– "महाशय, आप इस वक़्त साक्षात् भगवान की तरह आये और हमको तथा हमारी राजकुमारी पुष्पावती देवी को बचाया। यदि आप हमारे राजा से भेंट करेंगे तो वे बहुत प्रसन्न होंगे। कृपया हमारी प्रार्थना स्वीकार कीजिये।"

शूरजित उनके साथ राजधानी नगर में पहुँचा। राजा ने शूरजित तथा उसके पराक्रम की प्रशंसा की और उसकी सहायता के पुरस्कार के रूप में राजकुकारी पुष्पावती का उसके साथ विवाह किया।

विवाह के बाद शूरजित अपनी पत्नी के सौंदर्य को देख आश्चर्य चकित हो गया। पुष्पावती साक्षात् रंभा जैसी लगती थी। शूरजित ने कभी ऐसी सुन्दर और कोमल कन्या की कल्पना तक नहीं की थी।

उसी ससय शूरजित जाग पड़ा। सामने पुष्पावती न थी। वह अपने शयनकक्ष में अकेला था सपने में वह जिन वाद्यों को विवाह के समय बजाने वाले वाद्य मानता था, वे प्रात:काल दुर्ग में बजाये जानेवाले मंगल वाद्य थे।

शूरजित ने सपना ही देखा था, पर उसकी दृष्टि में पुष्पावती असली मालूम होती थी। वह किसी पड़ोसी राज्य में जरूर रहती होगी। चाहे किसी भी रूप में उस राजकुमारी के साथ शूरजित ने विवाह करने का निश्चय किया। इसके बाद कालकृत्य समाप्त कर वह सीधे अपने पिता के पास गया। सपने का समाचार सुना कर कहा कि मैं उस अपूर्व सुंदरी के साथ विवाह करूंगा।

ज्ञानी सुधीर ने अपने पुत्र से कहा– "बेटा, इस संसार में सौंदर्य और आनंद नश्वर हैं। क्षत्रिय का धर्म एक ही है– वह आदर्शपूर्वक शासन करके यश प्राप्त करना। ऐसा यश सबको प्राप्त नहीं होता।"

"ऐसी बात नहीं, पिताजी! मैं पुष्पावती को भूल नहीं सकता। उसकी याद के रहते मैं किसी दूसरी कन्या के साथ विवाह करके सुख भोग नहीं सकता।" शूरजित ने जवाब दिया।

राजा अपने पुत्र की लगन से परिचित था। इसलिए बोला–"बेटा, तुम अपनी पसंद की कन्या के साथ विवाह करो। तुमको शायद उसे ढूंढ़ने के लिए अनेक देशों में जाना पड़े। इसलिए यात्रा के लिए आवश्यक सारी चीज़ें लेकर रवाना हो जाओ।"

शूरजित आवश्यक हथियार ले एक घोड़े पर सवार हो चल पड़ा। सारा दिन यात्रा करके एक नगर में पहुँचा। वहाँ पर एक भठियारिन के घर ठहरा। भठियारिन ने शूरजित के लिए गरम पानी और भोजन का प्रबंध किया। भोजन के बाद वह लेट गया, तो थकावट की वजह

से जल्द ही नींद आ गयी। निद्रा में उसने फिर सपना देखा।

उस सपने में वह राजकुमारी पुष्पावती के साथ कुछ दिन अपनी ससुराल में रहा और अपने देश को लौट आया। उसके लौटने के पहले ही उसके पिता का स्वर्गवास हो चुका था और सारा नगर शोक में डूबा हुआ था। शूरजित ने अपने पिता की अंतिम क्रियाएँ कीं। इसके बाद उसका राज्याभिषेक भी हो गया।

राजा के बनने पर कुछ दिन तक उसने शासन कार्य में दिलचस्पी ली, लेकिन धीरे-धीरे उसका मन ऊबता गया। उसका ध्यान सदा पुष्पावती पर लगा रहता था। पलभर के लिए भी वह अपनी पत्नी को छोड़ नहीं रह सकता था। इसलिए उसने शासन का भार मंत्रियों पर छोड़ दिया और वह दिन-रात अंतःपुर में रहने लगा।

राजा को शासन के प्रति लापरवाह देख मंत्री अपने मनमाने ढंग से राज्य चलाने लगे। देश में अराजकता फैल गयी। यह बात जानकर पुष्पावती ने अपने पति को सचेत किया। मगर शूरजित ने उसकी परवाह न की और समझाया—"हमारे मंत्री बड़े ही समर्थ व्यक्ति हैं। वे मेरे पिताजी के ज़माने से रहते आये हैं। इसलिए मुझसे भी अच्छा वे लोग राज्य का भार संभालना जानते हैं।"

राज्य में अधिकारियों का दबाव बढ़ता गया। जनता राजा की निंदा करने लगी। देश-भर में लूट-खसोट और हत्याएँ बढ़ती गयीं। शत्रु राजाओं ने मौक़ा पाकर शूरजित के राज्य पर हमला बोल दिया।

पुष्पावती से सहा नहीं गया। वह अपने पति के पास जाकर बोली—"अगर मुझे पहले मालूम होता कि तुम ऐसे असमर्थ हो तो मैं तुमसे विवाह न करती। हमारा खज़ाना खाली हो गया है। तुम्हारे अफसर तुम को लूट चुके हैं, अब देश को लूट रहे हैं। तुम्हारे राज्य में ऐसी हलचल

की, उस पर वह बहुत खुश हुआ। युवक ने जफ़र की परेशानी को भांपते हुए कहा–"आप फ़िक्र मत कीजिये। संगीत सुनते, मजे से बातचीत करते आराम से अपना वक़्त बितायेंगे।"

जफ़र ने शराब पी ली, थोड़ी देर आराम किया। तब युवक ने दो घोड़े मंगवाये। वे दोनों घोड़ों पर सवार हो दमस्कस की गलियों में घूमते रहें, अंत में एक सुंदर महल के पास जा पहुंचे। उस महल के सामने रंग-बिरंगी लालटेनें थीं। भीतर एक बहुत बड़ी बैठक, शिल्प, तरह-तरह के पक्षी और फूल सजे थे।

दोनों अन्दर जा बैठे। तब युवक ने जफ़र से कहा–"आज आप के आगमन से हमें बड़ी खुशी हो रही है। अगर आप अपने परिवार के साथ आये होते तो क्या ही अच्छा होता! क्या मैं जान सकता हूँ कि आप हमारे इस नगर में क्यों पधारें?"

"साहब, मैं फ़ौज के एक छोटे से दल का सरदार हूँ, मैं अपने खलीफ़ा को शुल्क चुका न पाया। इसलिए जान हथेली में लिये वस्त्रा से भाग आया हूँ।" जफ़र ने जवाब दिया।

"आप का क्या नाम है?" युवक ने पूछा।

"आप का नाम ही मेरा भी नाम है।" जफ़र ने उत्तर दिया।

"तो आप का नाम अबू हल हसन है?" युवक मज़ाक करते हुए बोल पड़ा–"आप यहाँ जितने दिन रहेंगे, अपनी तक़लीफ़ों को भूल कर आराम से रहिये।" युवक ने कहा।

खाना खाने के बाद युवक ने जफ़र को अच्छी पोशाकें दिलायीं, फिर उसी युवती के द्वारा संगीत सुनवाया। उस युवक का नाम अत्तफ़ था। उसकी मेहमाननवाजी पर जफ़र को आश्चर्य हो रहा था।

रात को गुलामों ने जफ़र को बिस्तर बिछाते हुए अत्तफ़ के लिए भी एक बिस्तर

लगाया। इसे देख जफ़र ने अत्तफ़ से पूछा–"क्या आपकी शादी नहीं हुई?"

"क्यों नहीं, मैं शादी-शुदा हूँ।" अत्तफ़ ने जवाब दिया।

"तो अंत:पुर में जाकर क्यों नहीं सोते? यहाँ क्यों सोते हैं?" जफ़र ने पूछा।

"अंत:पुर तो कहीं जायगा नहीं, अतिथि को अकेले सुलाना उसका अपमान करना है।" अत्तफ़ ने कहा। अत्तफ़ ने जब यह भी कहा कि जब तक जफ़र उसका मेहमान बना रहेगा, तब तक वह उसके साथ ही सोयेगा, तब जफ़र अचरज में आ गया। वह मन ही मन यह सोचते सो गया कि "यह कैसा विचित्र आदमी है! ऐसा विचित्र व्यक्ति और कहीं न होगा।"

दूसरे दिन सवेरे नहा-धोकर अच्छे वस्त्र पहन कर दोनों घोड़ों पर सवार हो तीर्थ स्थान देखने निकले।

चार महीने इसी तरह बीत गये।

एक दिन जफ़र ने अत्तफ़ से कहा कि वह पैदल चलते सारी मसजिदों को देखना चाहता है। इस पर अत्तफ़ ने कोई आपत्ति नहीं उठायी, बल्कि दान-धर्म करने के लिए तीन सौ दीनार जफ़र के हाथ देकर भेज दिया।

जफ़र अपने खलीफ़ा की याद करके चिंता में पड़ गया। इसी विचार में चलते चलते वह एक बड़ी मसजिद के पास पहुँचा और संगमरमर की तीस सीढ़ियों को पारकर गया। मसजिद के सुन्दर शिल्प

को देख वह चकित रह गया। वहाँ पर नमाज पढ़कर कुछ शांति पायी। वहाँ से चलते चलते एक राजमहल जैसे विशाल भवन के पास पहुँचा।

उस भवन के अगले हिस्से पर रंग-बिरंगी चीनी मिट्टी के फलक लगे थे। चांदी की बनी खिड़की के किवाड़, सोने के चौखट, खिड़कियों पर लगे झीने परदों को देखते जफ़र की खुशी का ठिकाना न रहा। घर के सामने वाले संगमरमर के चबूतरे पर बैठे वह मकान की शोभा को निहारने लगा। उसी वक़्त एक खिड़की का परदा हट गया। गोरे रंग का एक हाथ बाहर निकला और सोने के पात्र से खिड़की के नीचे स्थित फूलों के गमले में पानी देने लगा। उस युवती का चेहरा चन्द्रमा जैसे सुन्दर था। उसे देख जफ़र मोहित हो उठा। युवती ने गमले में पानी देने के बाद युवक की ओर देखा। जफ़र को अपनी ओर एकटक देखते देख वह पूछ बैठी—"क्या यह मकान तुम्हारा है?"

"नहीं, मगर यह गुलाम तुम्हारा है।" जफ़र ने तन्मय होकर जवाब दिया।

"जब यह घर तुम्हारा नहीं, तब तुम अपने रास्ते क्यों नहीं चलते?" युवती ने पूछा।

"मैं एक छोटी कविता सुनाने यहाँ पर ठहर गया।" इन शब्दों के साथ जफ़र ने दो प्रणय गीत बनाकर सुनाया। गीत सुनने के बाद खिड़की बन्दकर युवती गायब हो गयी। जफ़र इस आशा से बड़ी देर तक खिड़की की ओर देखता रहा कि शायद वह फिर खुल जाय! लेकिन उसकी आशा निराशा में बदल गयी। शाम तक इंतज़ार करके वह अत्तफ़ के घर चला गया।

अत्तफ़ अपने मेहमान के इंतज़ार में मुख्य द्वार पर खड़ा ही था कि जफ़र को देखते ही गले लगाकर पूछा—"आज दिन भर आपने मुझे चिंता में डाल दिया।"

मगर जफ़र के दिल में हलचल मची हुई थी, इसलिए वह कोई जवाब न दे पाया।

अत्तफ़ ने जफ़र की आँखों में देखते पूछा—"लगता है कि आप किसी फ़िक्र में पड़े हुए हैं!"

"मेरी तबीयत ठीक नहीं है।" ज़फ़र ने जवाब दिया।

खाने बैठा तो जफ़र ने खाना छुआ तक नहीं। वह अपने खलीफ़ा के क्रोध को भी भूल बैठा था। उसके दिल में वह सुंदर युवती घर कर बैठी हुई थी। विरह-वेदना से वह रात भर सो नहीं पाया।

अत्तफ़ ने सवेरा होते ही पूछा—"जफ़र! आपकी तबीयत कैसी है?"

"मेरी तबीयत बहुत खराब है, अब मेरे जीने की इच्छा भी जाती रही है।" जफ़र ने भारी स्वर में उत्तर दिया।

जफ़र के मुंह से यह बात सुनकर अत्तफ़ को बड़ा दुख हुआ। उसने अपने एक नौकर के द्वारा शहर के मशहूर वैद्य को बुला भेजा। वैद्य ने जफ़र की नाड़ी की जांच करके समझ लिया कि बीमारी कैसी है? जफ़र के बदन में कोई बीमारी न थी। वह एक मानसिक बीमारी थी। उसने एक चिट पर लिखा—"यह प्यार का बुखार है" और उसे जफ़र के तकिये के नीचे रखकर चला गया।

अत्तफ़ ने उस चिट को देख ठठा कर हँसते हुए पूछा—"इस बीमारी का कारण कौन है?" जफ़र ने बड़ी देर तक असली बात नहीं बतायी, मगर अत्तफ़ के ज़ोर देने पर उसने सारी बातें बतायीं।

अत्तफ़ चिंता में पड़ गया। क्यों कि उसके अतिथि ने जिस युवती को प्यार किया था, वह और कोई न थी, बल्कि उसकी बीबी थी। वह अपने मायके में रहती थी। जफ़र ने उस मकान का पूरा हुलिया बताया था। उसे लगा कि खुदा ने उसके सामने एक बड़ा इम्तहान ही रखा है। उसका विश्वास है कि मित्रता में स्वार्थ के लिए कोई जगह नहीं है।

(और है)

अपूर्व सुंदरी

पुराने जमाने की बात है। एक राजा के तीन कन्याएँ थीं। बड़ी कन्याएँ उतनी सुंदर न थीं, मगर तीसरी कन्या अद्‌भुत सौंदर्य वाली थी। उसे जो भी देखता, वह यही कहता कि यह कन्या तो अपूर्व सुंदरी है। कालांतर में उसका नाम वही पड़ गया।

उस कन्या के माता-पिता ने सोचा कि इस अपूर्व सुंदरी का पति कोई राजा या महाराजा होगा; लेकिन ऐसा न हुआ। उस कन्या की बड़ी बहनों के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट करते कई युवक आगे आये, लेकिन अपूर्व सुंदरी के साथ विवाह करने एक भी युवक न आया। उसकी बड़ी बहनों की शादियाँ भी हो गयीं और वे ससुराल में जाकर अपनी गृहस्थी भी संभालने लगीं, मगर फिर भी अपूर्व सुंदरी का रिश्ता क़ायम न हुआ।

इस पर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने अपूर्व सुंदरी का भविष्य जानने के लिए ज्योतिषियों की राय ली। ज्योतिषियों ने कन्या की जन्मकुंडली जांच कर बताया–"महाराज, कोई भी कुलीन राजा इस कन्या के साथ विवाह न करेगा। इसकी ज़िंदगी जंगल और पहाड़ों में बीतेगी। यह असंख्य कठिनाइयाँ भोगेगी। दुष्ट व्यक्ति इसको कष्ट पहुँचायेंगे।"

ज्योतिषियों की बातें सुनने पर राजा और रानी को अपार दुख हुआ। ज्योतिष पर उनका पक्का विश्वास था। इसलिए वे एक दिन अपूर्व सुंदरी को एक निर्जन पहाड़ी प्रदेश में ले जाकर बोले–"बेटी, तुम्हारा विवाह जिस दुष्ट के साथ रचा गया हो, उसकी पत्नी बन कर कष्ट झेलते अपनी ज़िंदगी काटो।" ये बातें बता कर वे अपने महल को लौटे।

मदन मोहन

इधर अपूर्व सुंदरी की यह हालत थी, उधर गंधर्व लोक में इसकी वजह से थोड़ी हलचल ही मच गयी। 'अपूर्व सुंदरी' नामक उपाधि वाली एक गंधर्व रानी थी। सभी देवता जाति के लोगों ने यह स्वीकार कर लिया था कि तीनों लोकों में उस गंधर्व रानी से बढ़ कर कोई सुंदरी नहीं है। उसके नव मन्मथ नामक एक पुत्र था। सुंदरता में उसकी समता कर सकने वाला युवक देवगणों में दूसरा कोई न था।

गंधर्व रानी ने यह खबर सुनी कि मानव लोक में भी अपूर्व सुंदरी कहलाने वाली एक युवती है। उसके सौंदर्य का पता लगाने के लिए रानी ने अनेक गंधर्वों को भेजा। सबने अपूर्व सुंदरी को देख लौटने पर यही बताया—"रानी जी, उस मानवी का सौंदर्य आपके सौंदर्य से किसी भी मात्रा में कम नहीं है। आप से छोटी है, इसलिए इस पीढ़ी के लिए अपूर्व सुंदरी नामक उपाधि उसी के लिए उपयुक्त हो सकती है।"

इस पर गंधर्व रानी को बड़ा क्रोध आया। उसने अपने पुत्र नवमन्मथ को बुला कर कहा—"बेटा, तुम अपनी सारी विद्याओं का प्रदर्शन करके उस मानवी अपूर्व सुंदरी का घमण्ड चूर कर दो और एक नीच व्यक्ति पर उसके मन में मोह पैदा कर दो।"

मगर नवमन्मथ ने ऐसा नहीं किया। अदृश्य रूप में आकर उसने पहाड़ पर स्थित अपूर्व सुंदरी को देखा, उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो उससे प्यार करने लगा। उसने पहाड़ी तलहटी में एक सुंदर महल बनवाया, उसमें अपने नौकरों को नियुक्त किया। इसके बाद वायुदेव को बुला कर अपूर्व सुंदरी को घाटी में उतारने का आदेश दिया।

अपूर्व सुंदरी ने पहले सोचा कि कोई उसे घाटी में ढकेल रहा है और गहरी घाटी में गिर कर मर जायगी। लेकिन वह इस तरह घाटी में उतारी गयी कि उसे चोट तक न आयी। उस निर्जन

प्रदेश में एक सुंदर महल को देख वह चकित हो गयी ।

उस महल के सौंदर्य को देखते ही अपूर्व सुंदरी के मन में उस महल के भीतर जाने की इच्छा हुई । हिम्मत करके वह अन्दर गयी तो उसे ऐसा लगा कि कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति उसमें निवास कर रहा हो, पर उसे कोई दिखाई न दिया । फिर भी उसे ऐसा मालूम हुआ कि महल के भीतर मनुष्यों का संचार है और आपस में बात कर रहे हैं ।

उन अदृश्य व्यक्तियों ने अपूर्व सुंदरी के लिए खाना परोसा । गीत गाये । उसने बेफ़िक्र खाना खाया और अंधेरा होते ही जाकर लेट गयी ।

ये सारे प्रबंध अपूर्व सुंदरी के वास्ते नवमन्मथ ने ही किये थे । उस अंधेरे में वह अपूर्व सुंदरी के पास आया, गांधर्व रीति में उसके साथ विवाह किया और सवेरा होने के पहले ही चला गया । रोज़ यही क्रम चलता रहा । अपूर्व सुंदरी यह बिलकुल न जानती थी कि उसका पति कैसा है? उसकी सेवा कौन कर रहे हैं? मगर उसके दिन आराम से कट रहे थे ।

इधर अपूर्व सुंदरी के माता-पिता दुखी थे । उसकी बहनों ने भी दुख प्रकट करके अपने माता-पिता को सांत्वना दी ।

उस दिन की रात को नवमन्मथ ने अपूर्व सुंदरी से कहा–"प्रेयसी, तुम्हारे सामने एक बड़ा खतरा आने वाला है । तुम्हारे वास्ते तुम्हारी बहनें पहाड़ पर आवेंगी, तुम्हारा नाम ले लेकर रोयेंगी । तुम उनकी ओर बिलकुल देखो मत । उनके रोने पर विचलित न हो जाओ, इसी में तुम्हारी भलाई है ।" इस तरह सावधान किया ।

अपूर्व सुंदरी ने मान लिया । सवेरा होते ही उसका दुख उमड़ पड़ा । वह आज तक एकाकी ज़िंदगी बिता रही है । इतने दिन बाद उसकी बहनें रोते आनेवाली हैं । उन्हें सांत्वना देकर, उनसे बातचीत

करके, उनके कुशल क्षेम जानना नहीं चाहिये ? ज़िंदगी-भर क्या उसे इसी प्रकार क़ैदी की तरह दिन बिताने हैं?

ये ही बातें सोचते उसने दिन-भर स्नान तक नहीं किया, खाया भी नहीं, रात को नवमन्मथ के आते ही वह रो पड़ी।

"सुंदरी, तुम रोती क्यों हो? इस प्रकार रोते तुम मेरे साथ सुखपूर्वक कैसे अपने दिन काटोगी? तुम अपनी इच्छा के अनुसार करो, लेकिन बाद को तुम पछताओगी और खुद अनुभव करोगी कि मेरा कहना बिलकुल सत्य है।" नवमन्मथ ने समझाया।

इस पर अपूर्व सुंदरी ने अपने पति से यही अनुमति माँगी कि बहनें उसकी खोज में रोते हुए आ जावे तो उन्हें सांत्वना देकर उनसे बातचीत करने का अवसर दे।

"ऐसा ही करो। चाहे तो तुम जी भर कर सोना-चाँदी और रत्न पुरस्कार में दे दो। मगर उनकी सलाहों पर ध्यान न दो। खास कर वे मेरे बारे में, मेरे अवतार के बारे में जानने की इच्छा प्रकट करेंगी, तुम उनकी बातों में आकर मुझसे हठ करोगी तो मुझे खो दोगी, उस वक़्त से तुमको अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।" नवमन्मथ ने कहा।

ये बातें सुनने पर अपूर्व सुंदरी का दिल हल्का हो गया। उसने अपने पति से कहा-"मैं अपने प्राण छोड़ सकती हूँ, लेकिन आपको नहीं। आप नहीं जानते
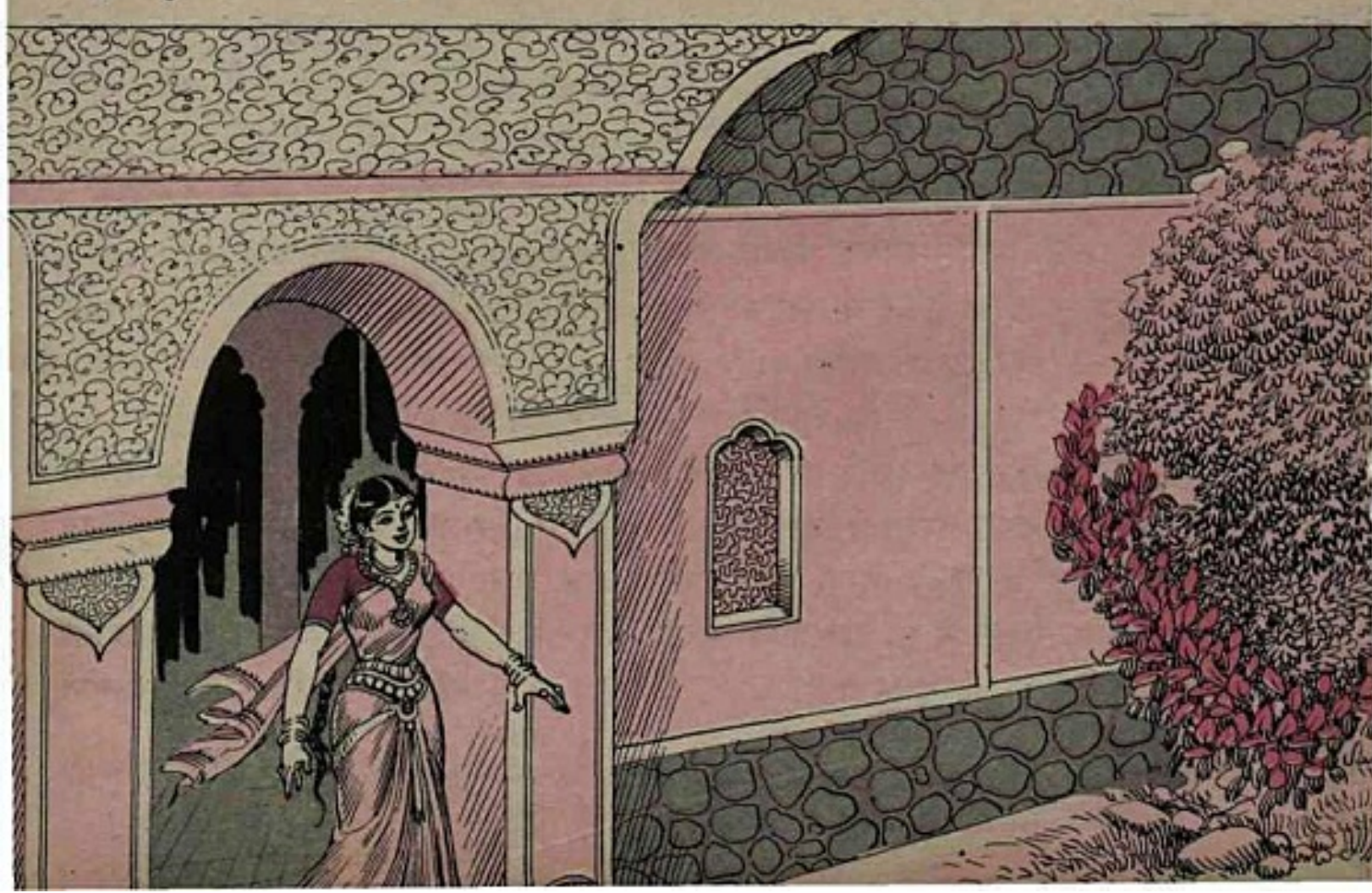
कि मैं आपसे कैसे प्यार करती हूँ? मेरा एक उपकार कीजिये। मेरी बहनें पहाड़ पर आयेंगी तो उनको वायुदेव के द्वारा घाटी में उतरवा दीजिये।"

नवमन्मथ को यह काम बिल्कुल पसंद न था, फिर भी अपूर्व सुंदरी के प्रति उसका जो प्रेम था, उसीसे प्रेरित हो वह मान गया और सवेरा होते देख वह रोज की भांति चला गया।

उसी दिन अपूर्व सुंदरी की बहनों ने उस पहाड़ के रास्ते का पता लगाया और वहाँ आ पहुँचीं। अपनी बहन को वहाँ न देख छाती पीटते रोने लगीं—"अरी बहन! अपूर्व सुंदरी! तुम्हारा क्या हो गया? कैसी यातनाएँ भोगती हो?"

अपनी बहनों के स्वर सुनते ही अपूर्व सुंदरी का उत्साह उमड़ पड़ा। वह महल के बाहर दौड़ी-दौड़ी आ गयी और बोली—"तुम रोती क्यों हो? मैं यहाँ सुखी हूँ। मुझसे गले आ मिलो।" ये शब्द कह कर उसने वायुदेव से प्रार्थना की कि उनकी बहनों को घाटी में उतारे।

तुरंत वायुदेव ने अपूर्व सुंदरी की बहनों को अपूर्व सुंदरी के सामने उतारा। वह अपनी बहनों को महल के भीतर ले गयी और उनको अपना सारा वैभव दिखाया। उसे देखते ही बड़ी बहनों के मन में अपूर्व सुंदरी के प्रति ईर्ष्या पैदा हो गयी। उन्होंने अपूर्व सुंदरी के पति के बारे में कई प्रश्न पूछे।

अपूर्व सुंदरी को अपने पति की चेतावनी याद थी। इसलिए उसने झूठमूठ अपनी बहनों से यही बताया कि उसका पति युवक और सुंदर है। वह अपना ज्यादा समय खेती और शिकार खेलने में बिताता है। इसके बाद उनको और थोड़े समय तक वहाँ ठहराना अपने लिए खतरनाक समझ कर उन्हें सोना, चांदी व हीरे दे दिये। तब वायुदेव से प्रार्थना की कि उनको पहाड़ पर पहुँचा दे।

बड़ी बहनें पहाड़ पर पहुँचने के बाद घर लौटते अपनी छोटी बहन के वैभव पर ईर्ष्या करने लगीं। जंगल में पड़ी रहने वाली के लिए ऐसा वैभव! उसका सर चढ़ गया है। इतनी सारी संपत्ति रखती है, हमें तो थोड़ी-सी ऐसी फेंक दी, मानों भीख दे रही हो।

अंत में दोनों बड़ी बहनों ने निर्णय कर लिया—"हमें किसी न किसी तरह इसका घमण्ड तोड़ना होगा। उसने हमें जो रास्ता दिखाया, उसका पता किसी को बताना नहीं है। अब हमें अपने मायके नहीं जायेंगी, बल्कि ससुराल जायेंगी। इस बीच अपनी बहन का खात्मा करने का कोई उपाय सोच कर फिर लौटेंगी।" इसके बाद केश फैलाये, कपड़े फाड़ते-रोते अपने माता-पिता के पास गयीं, दो-चार मिनिट के बाद अपनी अपनी ससुराल की ओर चल पड़ीं।

दूसरे दिन रात को नवमन्मथ ने अपूर्व सुंदरी को एक बार और सावधान करते हुए कहा—"तुम्हारी बहनें मादा भेड़ियों के समान हैं, वे तुम्हारे विनाश की योजना बना रही हैं। तुम उनकी योजना को रोकने का प्रयत्न न करोगी तो तुम्हें असंख्य तकलीफ़ें भोगनी पड़ेंगी। वे तुमको उकसायेंगी कि तुम मेरे रूप को देखें। मगर याद रखो कि मैं एक बार तुमको दिखाई दिया तो फिर बस कभी दिखाई न दूंगा। तुम इस वक़्त गर्भवती भी हो। इस हालत में तुम मुझे खो दोगी

तो कैसा खतरनाक है, अच्छी तरह याद रखो।"

अपूर्व सुंदरी ने आँसू बहाते हुए कहा– "मैंने आज तक आपकी आज्ञाओं का उल्लंघन नहीं किया, आगे भी न करूँगी। आपको जी भर कर देखने का भाग्य मुझे नहीं है। कम से कम मैं अपनी बहनों को देख प्रसन्न रहूँगी। अगर फिर वे आ जायेंगी तो वायुदेव से कहिये कि उनको पहाड़ पर से घाटी में उतार दे। मैं यही सोचूँगी कि आपके रूप को न देख सकने वाली अंधी हूँ।"

नवमन्मथ ने अपूर्व सुंदरी के आँसू पोंछ दिये, उसे सांत्वना देकर गले लगाया। फिर सवेरा होने के पहले वह चला गया।

सवेरा होते ही अपूर्व सुंदरी की बड़ी बहनें पहाड़ पर आयीं और जल्दबाज़ी में पहाड़ पर से घाटी में कूद पड़ीं। परंतु बीच रास्ते में वायुदेव ने उन्हें पकड़ लिया और कुशल पूर्वक उनको घाटी में उतारा। वे दौड़ी-दौड़ी महल में पहुँचीं, अपना संतोष प्रकट करते अपूर्व सुंदरी से गले लगा कर बोलीं–"अब तुम ज़रा मोटी हो गयी हो। क्या गर्भवती तो नहीं हो? मन्मथ जैसे पुत्र का जन्म दो।"

ये बातें सुनने पर अपूर्व सुंदरी का दिल उमड़ पड़ा। उसने सुंदर पक्वान्नों के साथ अपनी बहनों को भोजन कराया। भोजन के बाद विराम करते हुए बड़ी बहनों ने पूछा– "तुम्हारा पति कैसी आदतों वाला है?"

अपूर्व सुंदरी तो भोली थी, उसे वे बातें याद न थीं जो उसने पिछली बार अपने पति के बारे में अपनी बहनों से कही थीं। उसने यही कहा कि उसका पति अधेड़ उम्र का है, कहीं कहीं बाल पक रहे हैं, वह एक धनी व्यापारी है, अक्सर व्यापार किया करता है, वग़ैरह। इन बातों को सुन कर बड़ी बहनें भांप गयीं कि वह अपने मन की बात छिपा रही है।

उन्होंने कहा–"अरी, तुम कैसी भोली हो? तुम यह भी नहीं जानती कि तुम्हारे पति कौन हैं? हमारे सामने ही झूठ बोलती हो, हम से बढ़कर कौन तुम्हारा हित चाहनेवाला है? तुम्हारी जन्मकुण्डली में यही लिखा है कि नीच व्यक्ति तुम्हारा पति होगा। हो सकता है कि वह कोई सर्पराज हो! वह इन सुख-संपदाओं के द्वारा तुमको कुछ समय तक प्रसन्न रखेगा और फिर तुमको निगल डालेगा। अरी, तुम्हारी हालत न मालूम क्या होनेवाली है?" इन शब्दों के साथ वे रो पड़ीं।

बड़ी बहनों की बातें सुनकर अपूर्व सुंदरी का कलेजा कांप उठा। उसने विश्वास कर लिया कि ये उसका हित चाहकर ही ये बातें बता रही हैं। उसके मन में अपने पति के रूप को लेकर संदेह पैदा हो गया, क्योंकि उसने अपने पति का वास्तविक रूप आज तक नहीं देखा था। अलावा इसके वह अपनी बड़ी बहनों की निंदा करता आ रहा है। इसका कारण क्या होगा। यही होगा कि उसकी बहनें होने वाले खतरे की चेतावती देंगी।

इस परेशानी में अपूर्व सुंदरी ने अपनी बहनों से बताया कि उसने आज तक अपने पति को देखा नहीं, मौक़ा पाकर बड़ी बहनों ने छोटी के दिल में ज़हर घोल दिया।

"तुम भी कैसी भोली हो? जिस पति को देखा तक नहीं, उसके साथ गृहस्थी कैसे चलाती हो? वह ज़रूर कोई न कोई राक्षस या सर्प होगा! इसलिए तुम एक काम करो। तुम एक तलवार को पैनी बनाकर अपनी चारपाई के नीचे रख लो। तुम्हारे पति के सोते ही एक हाथ में दीपक लो और दूसरे हाथ में तलवार लेकर तुम्हारे पति की गर्दन पर ज़ोर से वार कर दो। तुमने थोड़ी-सी भी देरी कर दी तो बच न सकोगी।" बड़ी बहनों ने अपूर्व सुंदरी को समझाया।

अपूर्व सुंदरी का जब अपने पति पर से विश्वास उठ गया, तब अपनी बहनों की बातों पर उसका विश्वास जम गया। उसने अपनी बहनों के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और वायुदेव की सहायता से उनको पहाड़ पर पहुँचा दिया।

इसके बाद उसने एक पैनी तलवार लेकर अपने शयनकक्ष में छिपा दी। एक दिया में तेल व बत्ती डालकर चारपाई के नीचे रख दी। उस रात को जब उसका पति गहरी नींद सो रहा था, तब वह उठ खड़ी हुई। दिया जलाकर हाथ में तलवार ले अपने पति के पास पहुँची।

दीपक की रोशनी में अपने पति के चेहरे को देख वह आश्चर्य में आ गयी। वह न कोई राक्षस था और न सर्प ही। बल्कि उसने ऐसे सुंदर चेहरे को आज तक देखा न था। वह एक दम मुग्ध हो झुक कर उसे चूमने को हुई, तभी उसके हाथ के दीपक का तेल उसके पति के गाल पर जा गिरा।

झट नवमन्मथ उठ बैठा। अपनी पत्नी के हाथों में दीपक और तलवार को देख वह समझ गया कि उसने अपनी शर्तों का उल्लंघन किया है। इस पर उसने अपूर्व सुंदरी से कहा–"अभागिन! तुम्हारे प्रेम में पड़कर मैंने अपनी माता की आज्ञा का भी उल्लंघन किया है। गंधर्व होकर भी एक मानवी को अपनी पत्नी बनाकर मैं अपराधी बन गया। इस तरह की घटना होने से रोकने के लिए ही मैंने बार-बार तुमको चेतावनी दी। फिर भी तुम मेरा सर काटने के लिए तुल गयी हो! तुमको मैं यही दण्ड दूँगा कि आइंदा मैं तुम्हारे पास नहीं आऊँगा। लेकिन तुम्हारी बहनों ने तुम्हारे दिल में ज़हर घोल दिया, उनको मैं क्षमा नहीं कर सकता।" ये शब्द कहकर नव मन्मथ वहाँ से चला गया।
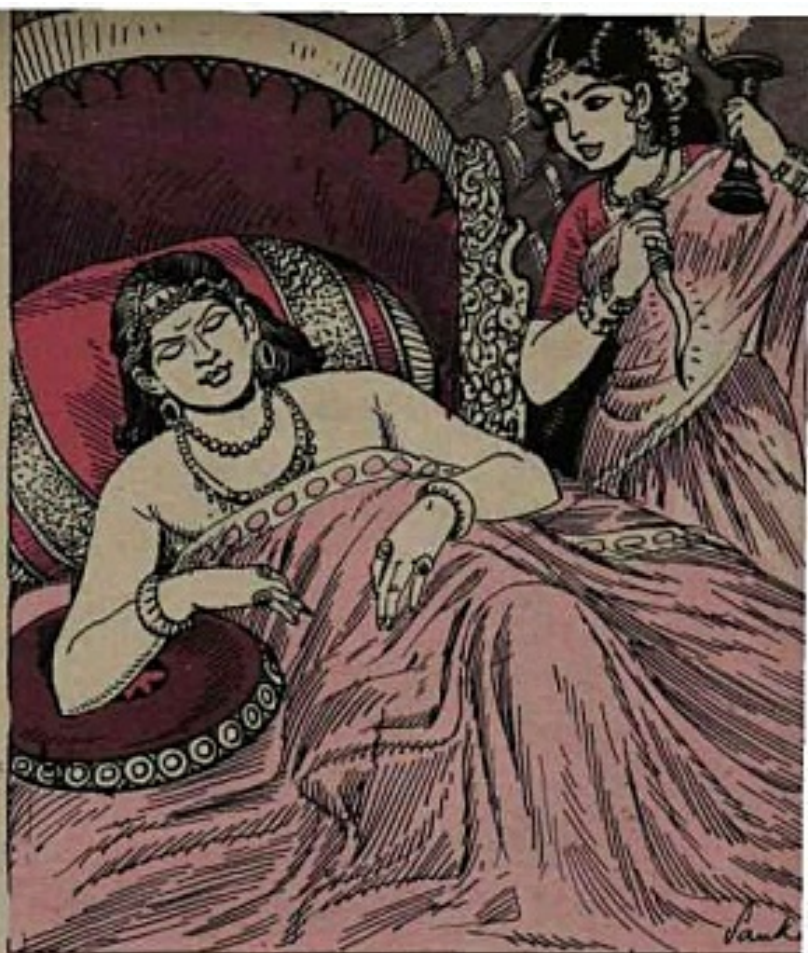
अपूर्व सुंदरी अपने पति के चरणों पर गिर कर रोयी। लेकिन कोई फ़ायदा न

यह बात कहकर अपूर्व सुंदरी चली गयी। तब बड़ी बहन अपने पति से कोई बहाना करके घर से चल पड़ी। पहाड़ पर पहुँच कर बोली–"हे नवमन्मथ? मैं तुम्हारे पास आयी हूँ।" इन शब्दों के साथ वह घाटी में कूद पड़ी। इस बार वायुदेव ने उसकी मदद न की थी, इसलिए वह घाटी में गिर कर मर गयी।

इसी प्रकार अपूर्व सुंदरी ने अपनी मंझली बहन से भी बदला ले लिया। वह भी नवमन्मथ की पत्नी बनने के विचार से पहाड़ पर आयी। वहाँ से घाटी में कूद कर मर गयी।

रहा। उसने अंत में निश्चय कर लिया कि आखिर वह पत्नी के रूप में नवमन्मथ की सेवा न कर सकेगी तो कम से कम परिचारिका बन कर सारी ज़िंदगी बिता देगी, तब वह वहाँ से चल पड़ी।

कुछ दिन बाद वह अपनी बड़ी बहन के घर पहुँची और बोली–"दीदी, तुमने जो सलाह दी, वैसा ही किया। मगर मेरा पति कोई राक्षस या सर्प नहीं, बल्कि एक गंधर्व जाति का युवराज है। नवमन्मथ है। मैंने उनकी आज्ञा का उल्लंघन किया, इसलिए मुझे घर से निकाल दिया। कहते हैं कि वे तुमसे विवाह करनेवाले हैं।"

इसी समय गंधर्व रानी को अपने पुत्र की करनी का पता लग गया। उसकी जानी दुश्मन अपूर्व सुंदरी के साथ विवाह करके उसी के पुत्र ने उसके साथ दगा दिया। अलावा इसके उसके गाल पर एक फफोला पड़ गया है।

"मेरी आज्ञा का उल्लंघन करके मेरी दुश्मन को तुम अपनी बहू कैसे बनाओगे?" गंधर्व रानी ने अपने पुत्र से पूछा। इसके बाद उसने अपने पुत्र को घर से बाहर निकलने से मना कर दिया।

कुछ दिन बाद अपूर्व सुंदरी गंधर्व लोक में गयी और गंधर्व रानी के पास जा

पहुँची। रानी के नौकर उसको पहचान गये और रानी के पास ले गये।

"क्या तुम अपनी सास के चरणों पर गिरने आयी हो? या चेहरा जलने पर परेशान होनेवाले अपने पति का परामर्श करने आयी हो?" गंधर्व रानी ने अपूर्व सुंदरी को डांटा और उसे नाना प्रकार के कष्ट देने के लिए अपने नौकरों को आदेश दिया।

नव मन्मथ को अपूर्व सुंदरी की हालत पर दया आयी। अपनी माता के द्वारा उसको रोज़ कष्ट देते उससे देखा नहीं गया। अलावा इसके वह इस हालत में पहुँचा कि अपूर्व सुंदरी का वियोग उसके लिए दूभर हो गया।

इसलिए एक दिन अपनी माता की अनुपस्थिति में नव मन्मथ सीधे इन्द्र के पास गया और अपनी माता के द्वारा अपनी पत्नी को दी जानेवाली यातनाओं का ज़िक्र करके न्याय करने की फ़रियाद की। तुरंत इंद्र ने सभा बुलायी। उसमें गंधर्व रानी, नव मन्मथ तथा अपूर्व सुंदरी को बुलवा कर गंधर्व रानी से क़ैफ़ियत तलब की।

"गंधर्व जाति का मेरा पुत्र मानवी को अपनी पत्नी कैसे बना सकता है? क्या मानव और देवताओं में कोई अंतर नहीं है? उन दोनों की जो संतान होगी, वह किस जाति की मानी जायगी? उनको किसी भी लोक में स्थान नहीं मिल सकता?" गंधर्व रानी ने कहा।

"यह कोई बड़ी समस्या नहीं है! इस युवती को अमृत पिलाकर इसे हम देवत्व प्रदान करेंगे।" इन शब्दों के साथ इन्द्र ने अमृत मंगवाया और अपूर्व सुंदरी को पिलाया।

इसके बाद इन्द्र ने सभा के सम्मुख नवमन्मथ तथा अपूर्व सुंदरी का विवाह कराया। इस पर किसी को कोई आपत्ति न रही। अपूर्व सुंदरी गर्भवती थी, इसलिए उसने समय पर देवता अंशवाले एक पुत्र का जन्म दिया।

चोर कौन?

एक न्यायाधीश के पास एक फ़रियाद आयी। दो आदमी एक मोतियों की माला के पीछे झगड़ा कर रहे थे। एक के हाथ में माला थी। दूसरा कह रहा था कि माला तो उसीकी है, पर इसने चोरी की है। पहला आदमी कह रहा था कि माला तो उसीकी है। मगर दूसरा उसे हड़पना चाहता है।

न्यायाधीश उस माला की जांच करके चकित रह गया और बोला–"इस माला को राजमहल से चोरों ने चुराया है। बताओ कि बाक़ी गहनों को तुम लोगों ने कहाँ पर छिपा रखा है? वरना तुम्हारे सर कटवा दूंगा।"

इस पर वे दोनों आदमी घबरा गये और बोले–"हमने इस माला को अमुक घर से चुराया है, बाक़ी गहनों के बारे में हम बिल्कुल नहीं जानते।"

दोनों ने जो हुलिया बताया वह घर न्यायाधीश का था। इसलिए न्यायालय के सिपाहियों ने उस घर की तलाशी ली। वहाँ पर राजमहल के वे सारे गहने मिल गये, जो चोरी गये थे। इस पर न्यायाधीश को फाँसी पर लटकाया गया।

तीन घंटों के बीतते ही बूंदा-बूंदी शुरू हुई, धीरे धीरे वह आंधी और वर्षा के रूप में बदल गयी। थोड़ी देर बाद वर्षा थम गयी।

वर्षा के थमते ही राजा सभासदों को साथ ले राजमहल के बाहर आया। सुगुण शर्मा के कहे मुताबिक़ एक बड़ी मछली सिंह द्वार से बीस फुट की दूरी पर पड़ी हुई थी और वह काली थी।

इस पर राजा ने सुगुण शर्मा का अभिनंदन करते हुए कहा–"हमारे दरबारी ज्योतिषी रामशास्त्री से तुम महान हो। मैंने सोचा था कि रामशास्त्री से बड़ा ज्योतिषी इस संसार में नहीं है, मगर तुम उनसे भी बड़े हो।"

राजा की बातें सुनने पर अपमान से रामशास्त्री का चेहरा मुरझा गया। मगर सुगुण शर्मा राजा की प्रशंसा से फूला नहीं, उसने रामशास्त्री के साथ आलिंगन किया और राजा से कहा–"महाराज, ज्योतिष शास्त्र में रामशास्त्री किसी भी बात में मुझसे कम नहीं हैं। उनमें केवल कल्पना शक्ति का अभाव है। वास्तव में रामशास्त्री ने जो बातें कहीं, वे पूर्ण सत्य हैं। मछली जब नीचे गिरी थी, तब सफ़ेद ज़रूर थी। कीचड़ में लोटने के कारण वह काली हो गयी। अलावा इसके वह ठीक सिंह द्वार के पास ही गिरी थी, मगर जीवित रहने के कारण वह बीस फुट उछलते चली गयी। रामशास्त्री अपने शास्त्रज्ञान के साथ कल्पना शक्ति को जोड़ देते तो वे भी वही बातें कहते, जो मैंने बतायी हैं।"

रामशास्त्री ने अनुभव किया कि सुगुण शर्मा की बातों में सचाई है।

राजा ने दोनों ज्योतिषियों का समान रूप में सत्कार किया और उन्हें पुरस्कार भी दिये। राजा ने सुगुण शर्मा के लिए एक पालकी का प्रबंध किया, जिसमें बैठकर वह अपने देश को लौट गया।

नवाब और फकीर

एक जंगल में एक ज्ञानी फ़कीर था। उनके दर्शन करके उपदेश सुनने के लिए लोग दूर दूर से उनके पास जाया करते थे।

भक्तों की संख्या के बढ़ने के साथ उनका स्वागत करना भी फ़कीर के लिए एक बहुत समस्या बन गयी। इसलिए वह धन की सहायता पाने के लिए नवाब के पास पहुँचा। नवाब फ़कीरों की इज्ज़त करता था। इसलिए सिपाहियों ने उसे भीतर ले जाकर आसन पर बिठाया।

उस वक़्त नवाब प्रार्थना करते हुए भगवान से निवेदन कर रहा था—'भगवान, मेरा राज्य और विशाल बना दो, मुझे और बहुत सारी संपत्ति दो।'

ये बातें सुनते ही फ़कीर उठ कर बाहर चला आया। नवाब उसी वक़्त अपनी प्रार्थना समाप्त कर बाहर आया। फ़कीर उसके दर्शन किये बिना जा रहा था, इस पर आश्चर्य में आकर नवाब ने उसे बुला भेजा और पूछा—"आप जा क्यों रहे हैं?"

"बेटा, मैं तुम से याचना करने आया, लेकिन मैं अब यह जान कर चला जा रहा हूँ कि तुम भी एक याचक हो।" फ़कीर ने जवाब दिया।
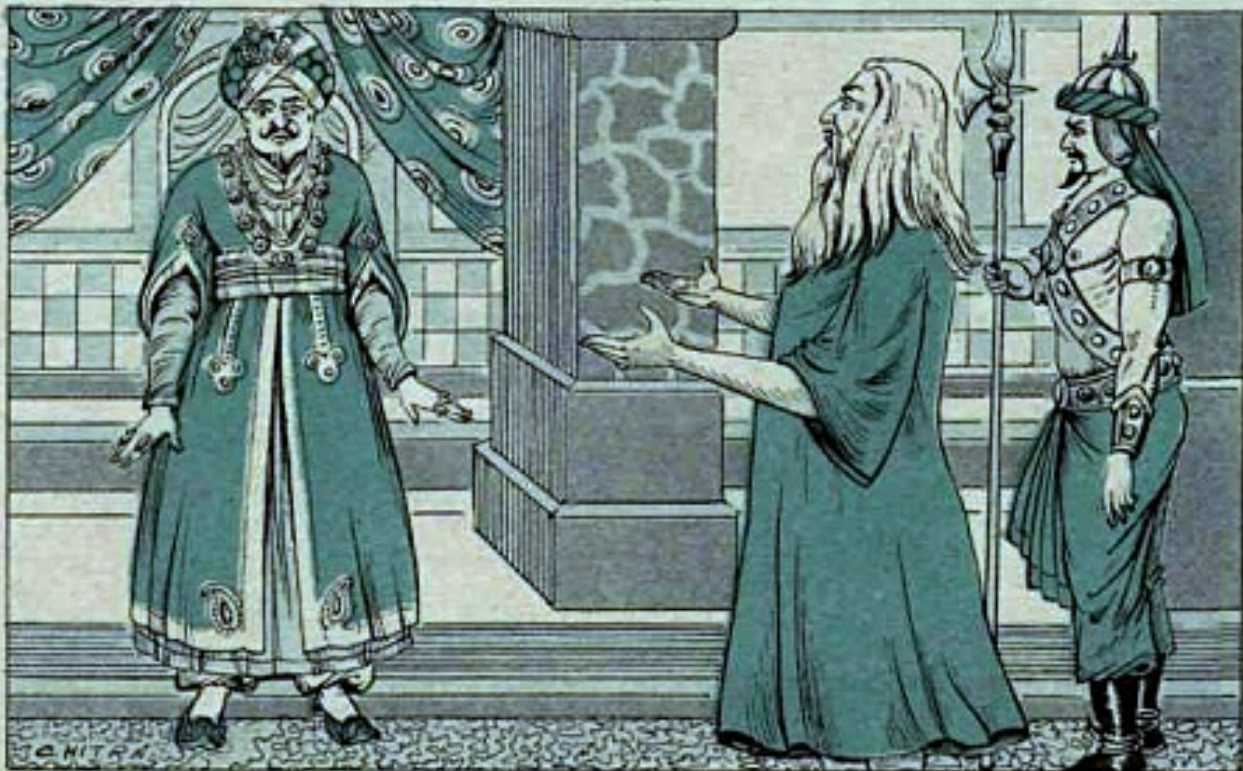
मूक प्रेम

एक राजा था जो जानवरों से ज्यादा प्रेम करता था। वह खूँख्वार जानवर को भी सताता न था, बल्कि अगर कोई मूक जानवरों को सताता तो उन्हें सजा देता था।

एक दिन राजा अपने घोड़े पर सवार हो नगर में घूम रहा था, तभी उसने देखा कि एक आदमी लाठी से बाघ को मार रहा है। राजा को बड़ा क्रोध आया। उसने गरज कर पूछा–"तुम उस मूक बाघ को क्यों सताते हो?"

"महाराज, यह मेरा पालतू बाघ है। आज तक इसने किसी को कोई कष्ट न दिया, मगर आज मेरी आँख बचाकर इसने एक बकरी को मार डाला है। इसलिए मैं इसे सजा दे रहा हूँ।" उस आदमी ने बताया।

यह बात सुनकर राजा और नाराज हो उठा और बोला–"मूक जानवर को सताना क़ानून के विरुद्ध है।" यह कहकर उस आदमी को कारागृह में भेज दिया।

उस आदमी ने कारागार में जाते हुए निवेदन किया–"महाराज, मेरे बाघ की अच्छी तरह से देखभाल कीजियेगा।"

राजा के पास और कई बाघ पाले जाते थे। इस बाघ को भी उनके साथ रखवाया और उसकी देखभाल का प्रबंध कराया। कुछ दिन बीत गये। एक दिन राजा अपने पालतू जानवरों की जांच करते बाघों के पिंजड़ों के पास पहुँचा। वहाँ पर कई बाघों के बीच उसे एक कमज़ोर बाघ दिखायी दिया।

"यह बाघ कमज़ोर क्यों है? क्या इसे कोई बीमारी तो नहीं हुई? इलाज कराते हो कि नहीं?" राजा ने पूछा।

"महाराज, यह बाघ नया नया लाया गया है। जब से यह यहाँ आया है,

रामनिवास शर्मा

तब से इसने खाना छुआ तक नहीं। पानी तक नहीं पिया। यह उपवास कर रहा है।" नौकरों ने जवाब दिया।

"यह बाघ कहाँ से मंगवाया गया है?" राजा ने फिर पूछा।

"इसके मालिक को आपने कारागार में रखा है। यह उसका पालतू बाघ है?" नौकरों ने कहा। राजा को तब वह सारी घटना याद आ गयी।

"कारागार से उस आदमी को ले आओ।" राजा ने अपने नौकरों द्वारा उस आदमी को बुला भेजा।

"तुम अपने बाघ को क्या खिलाते थे? वह कोई चीज़ नहीं खाता, क्या बात है?" राजा ने पूछा।

"महाराज, वह भी और बाघों के साथ मांस खाता है।" उसने उत्तर दिया।

"मेरे पास जब से लाया गया है, तब से उसने बिलकुल नहीं खाया। वह कमज़ोर हो गया है।" राजा ने कहा।

घबराते हुए उसने कहा—"महाराज! मैं उसे एक बार देखना चाहता हूँ।"

वे बाघों के पिंजड़ों के पास पहुँचे। वह बाघ अपने मालिक को देखते ही उठ कर चला आया और उसके शरीर को चाटने लगा। उसकी यह हालत देख रोते हुए उसने उसके साथ आलिंगन किया।

उसने जब अपने हाथ से खाना खिलाया, तब वह लपक कर खाने लगा। इस दृश्य को देखते ही राजा की आँखें खुल गयीं। जानवरों को अनुशासन में रखने के लिए उन्हें दण्ड देना पड़ता है। यह क्रूरता नहीं कहलाती। राजा ने समझ लिया कि उस व्यक्ति तथा बाघ के बीच जो प्रेम है, उसमें सौवां हिस्सा भी उसमें नहीं है और उसने आज तक किसी मूक जानवर के साथ स्नेह नहीं किया है।

इस घटना के बाद राजा ने उसकी सज़ा रद्द की और अपने सभी जानवरों के प्रधान पर्यवेक्षक के पद पर उसे नियुक्त किया।

क़िस्मत

एक गाँव में दो बूढ़े थे। उनमें एक भला आदमी था और दूसरा दुष्ट आदमी था। वे दोनों नये वर्ष के प्रथम दिन एक जगह मिले।

"मैंने रात में एक विचित्र सपना देखा। मेरी क़िस्मत आसमान से टपक पड़ी है।" भले ने जवाब दिया।

"अरे, यह तो बड़ी विचित्र बात है। क्योंकि मैंने भी सपना देखा, मगर मेरी क़िस्मत ज़मीन से निकल आयी।" दुष्ट ने बताया।

"देखें, किसकी क़िस्मत कैसी है?" भला आदमी यह कह कर घर चला गया।

कुछ दिन बीत गये। जाड़े का मौसम चला गया।

"आज खेत का काम शुरू कर सकते हैं।" यह सोच कर भला आदमी कुदाल और फावड़ा ले खेत की ओर चला पड़ा। जाते ही उसने कुदाल चलाना शुरू किया। कुदाल से कोई चीज़ लग कर खन् की आवाज़ आयी।

'अरे इस खेत में पत्थर कहाँ से आये?' यह सोचते भले आदमी ने खोद कर देखा तो पीतल का एक घड़ा दिखाई दिया। उसने बड़े ही विस्मय के साथ घड़े का ढक्कन खोल कर देखा तो उसमें सोने की दीनारें दिखाई दीं। भले आदमी ने फिर उस ढक्कन को उसी प्रकार बंद किया।

"यह खजाना बेचारे उस बूढ़े का होगा। उसने नव वर्ष के दिन बताया था कि उसकी क़िस्मत ज़मीन से निकल आयी है। उसने सपने की बात भी बतायी थी। जाकर मैं उसे सूचित कर देता हूँ।" यह सोच कर भला आदमी दुष्ट के पास गया और बोला–"महाशय, तुम्हारी क़िस्मत मेरे खेत में प्रकट हो गयी है, घड़े में सोने

जापानी लोककथा

की दीनारें भरी पड़ी हैं। तुम मेरे खेत में जाकर ले आओ।" यह कह कर वह अपना घर चल गया।

उसने घर पहुँचते ही अपनी पत्नी से कहा–"मैंने जब उस बूढ़े से यह बात कही कि उसकी क़िस्मत हमारे खेत में प्रकट हो गयी, बेचारा वह बहुत खुश हुआ। अब तक वह अपना घड़ा घर लाया होगा।"

"तुमने बड़ा अच्छा किया।" भले की पत्नी ने कहा। थोड़ी देर तक वे दोनों इसी खजाने के बारे में बातचीत करते रहें। इस बीच दुष्ट आदमी भले आदमी के खेत में गया। उसने जल्दी उस जगह को पहचान लिया जहाँ घड़ा था। क्योंकि वहाँ पर मिट्टी खोदी गयी थी। दुष्ट ने खोद कर घड़ा निकाला, ढक्कन हटा कर देखा, तो उसे दीनारों की जगह साँप दिखायी दिये।

दुष्ट को बड़ा गुस्सा आया।

"बदमाश, इसने मेरे साथ कैसा दगा दिया? उससे इसका बदला लेना चाहिये।" यह सोच कर दुष्ट आदमी ने घड़े का ढक्कन बंद किया और उसे अपने साथ ले गया। उस दिन रात को घड़ा लेकर दुष्ट आदमी भले आदमी के घर आया। सीढ़ी लगा कर छत पर पहुँचा और गवाक्ष में से नीचे झांक कर देखा। दुष्ट ने देखा, भला आदमी ठीक गवाक्ष के नीचे लेटा हुआ है। उसे देखते ही दुष्ट का क्रोध उमड़ पड़ा। उसने ढक्कन हटाया, उसे गवाक्ष में से भीतर ले जाकर नीचे गिराया।

मगर जैसे दुष्ट ने सोचा था कि भले आदमी पर सांप गिर जायेंगे, वैसा नहीं हुआ, बल्कि सोने की दीनारें भले आदमी के चारों तरफ़ गिर गयीं। उसने खुशी में आकर अपनी पत्नी को जगाया और कहा–"देखती हो न, मेरा सपना सत्य हो गया। हमारी क़िस्मत आसमान से टपक पड़ी है।"

उस दिन से भले की गरीबी जाती रही और वह अपनी पत्नी के साथ सुखपूर्वक दिन बिताने लगा।

दो ज्योतिषी

कलिगपुर में सुगुण शर्मा नामक एक ज्योतिषी था। उसने ज्योतिष और गणित शास्त्रों में पूर्ण पांडित्य प्राप्त किया था। वह भूत और भविष्य को स्पष्ट बता सकता था। इस कारण उसने अपार यश के साथ धन भी कमा लिया था। "त्रिकालज्ञ" नामक एक उपाधि भी उसे प्राप्त थी।

कुछ समय बाद सुगुण शर्मा के मन में यह इच्छा पैदा हुई कि उससे भी बड़ा ज्योतिषी अगर संसार में कहीं हो, तो उसका पता लगावे। इस आशय को लेकर उसने अनेक देशों का पर्यटन किया और कई प्रसिद्ध ज्योतिषियों से मुलक़ात भी की। मगर उनमें उसकी बराबरी कर सकनेवाला ज्योतिषी एक भी दिखाई न दिया। अनेक ज्योतिषियों ने असंबद्ध बातें बतायीं। कुछ लोगों ने झूठ-मूठ कुछ कहा। सुगुण शर्मा यह सोचकर बड़ा दुखी हुआ कि ऐसे ही लोगों की वजह से ज्योतिषशास्त्र पर से लोगों का विश्वास उठता जा रहा है।

देशाटन के समय सुगुण शर्मा को मालूम हो गया कि अवंती राज्य के दरबारी ज्योतिषी रामशर्मा विशेष प्रसिद्ध है और ज्योतिष शास्त्र का अच्छा ज्ञाता भी है।

सुगुण शर्मा अवंती राज्य में जाकर राजसभा में पहुँचा। अवंती राजा ने सुगुण शर्मा की प्रसिद्ध के बारे में पहले ही सुन रखा था। इसलिए उसका अच्छा स्वागत किया और अपने दरबारी ज्योतिषी रामशास्त्री का परिचय भी कराया। दोनों ज्योतिषियों ने चर्चा शुरू की। उनकी चर्चा को सुननेवाले सभासद यह निर्णय नहीं कर पाये कि इन दोनों में श्रेष्ठ कौन है?

लक्ष्मीकांत

राजा ने भी मन में निर्णय किया कि उन दोनों के ज्ञान की परीक्षा ले और यह निर्णय लिया जाय कि दोनों में श्रेष्ठ कौन है? मंत्री की सलाह पर दोनों के सामने एक समस्या रखते हुए राजा ने कहा—"आज शाम के अन्दर इस प्रदेश में कौन-सी घटना घटित होनेवाली है? मेरे मन में यह जानने का कुतूहल है कि आप दोनों में से किसका कहना बिलकुल सत्य होगा।"

राजा के मन की बात सुनते ही दरबारी ज्योतिषी ने कोई हिसाब लगाया और बताया—"इस वक़्त से ठीक तीन घंटों में बिजली के गर्जन के साथ आंधी और वर्षा होगी। उस वक़्त एक बहुत बड़ी सफ़ेद मछली ठीक राजमहल के सिंहद्वार पर आ गिरेगी।"

राजा ने अब सुगुण शर्मा की ओर देखा। सुगुण शर्मा ने मंदहास करते हुए कहा—"तीन घंटों में आंधी और वर्षा का होना सत्य है। वर्षा के साथ बड़ी मछली का गिरना भी सत्य है। मगर वह मछली सफ़ेद न होकर काली दिखाई देगी। अलावा इसके वह मछली सिंह द्वार के बीस फुट की दूरी पर दिखायी देगी।"

दोनों के ज्योतिष में थोड़ा अंतर था। इसलिए राजा और सभासदों के मन में यह कुतूहल पैदा हुआ कि किसकी बात सच निकलेगी। सब बड़े ही कुतूहल के साथ इंतजार करने लगे।

३१. सौगंधिक पुष्प का अपहरण
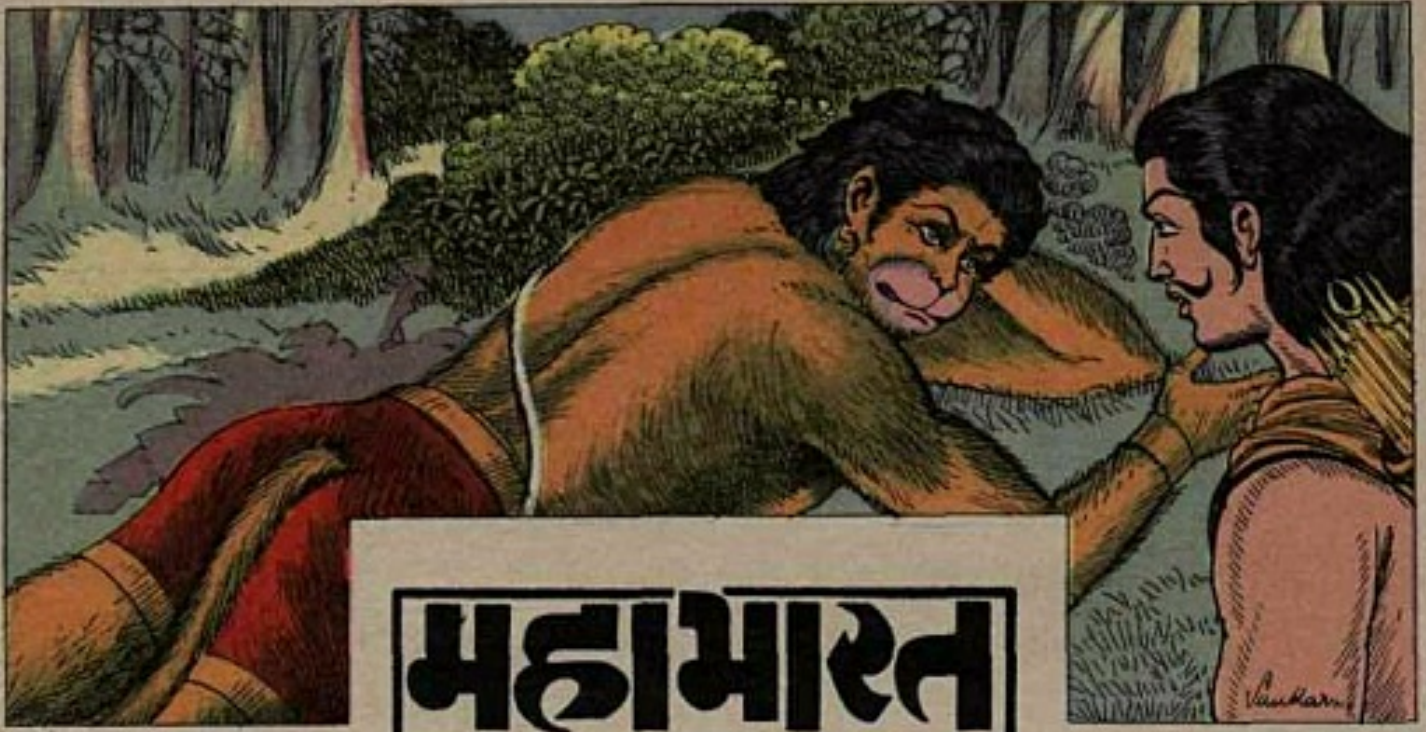
हनुमान केले के वन के बीच लेटा हुआ था। लाल-लाल चेहरा, हरी आँखें, सोने के वर्ण की देहवाला वह व्यक्ति रास्ते को रोके हुए पड़ा था। इस आकृतिवाले हनुमान को देख भीम जरा भी विचलित नहीं हुआ; बल्कि निकट पहुँचकर सिंहनाद किया।

हनुमान ने आँखें खोलकर भीम की ओर देखा और मंदहास करते हुए बोला— "बेटा, मैं बूढ़ा हूँ और बीमार भी हूँ। थककर मैं आराम से सो रहा था। मुझे तुमने क्यों जगाया? मुझ जैसे जानवर पर तुम जैसे ज्ञानी और बुद्धिमान व्यक्ति को दया दिखानी चाहिये थी। लगता है, तुम बड़ों की इज्ज़त करना भी जानते नहीं हो! तुम अकेले इस ओर क्यों आये हो? इसके आगे जो प्रदेश पड़ता है, उसमें देवताओं का संचार होता है! वहाँ पर मानवों का जाना मना है। इसलिए तुम मेरी बात मानकर वापस लौट जाओ।"

"मैं क्षत्रिय हूँ। कुरुवंशी हूँ। मेरा नाम भीमसेन है। तुम कौन हो? तुम्हें बंदर का यह रूप क्यों प्राप्त हुआ है? मुझे रास्ता दो!" भीमसेन ने पूछा।

"मैं वानर हूँ। तुमको रास्ता नहीं दूँगा। ज़ोर-जबर्दस्ती न करो। चुपचाप वापस लौटकर चले जाओ।" हनुमान ने जवाब दिया।

"तुम मुझे रास्ता न दोगे तो मैं सिर्फ़ जबर्दस्ती ही नहीं करूँगा बल्कि तुम्हारी

हानि भी करूँगा, समझें!" भीमसेन ने कहा।

"भाई, मैं बूढ़ा हूँ। उल्टे मेरी तबीयत खराब है। सचमुच तुम आगे बढ़ना ही चाहते हो तो मुझे लांघकर चले जाओ।" हनुमान ने समझाया।

"मैं जानता हूँ कि किसी व्यक्ति को लांघकर जाना पाप है। वरना मैं इस तरह तुमको लांघकर पार कर जाता, जैसे हनुमान ने समुद्र पार किया था।" भीमसेन ने जवाब दिया।

"हनुमान कौन है? उसे समुद्र को क्यों पार करना पड़ा?" हनुमान ने पूछा।

"मेरे जैसे हनुमान भी वायुदेव का पुत्र है। रिश्ते में वह मेरा भाई लगता है। वह बड़ा ही महान व्यक्ति है। जब श्रीरामचन्द्र की पत्नी को रावण उठा ले गया, तब हनुमान सीताजी की खोज में समुद्र पार कर लंका में गया। मैं भी उस हनुमान के समान बल और पराक्रम रखता हूँ। मेरी बात मानकर रास्ते से हट जाओ, वरना बड़ा बुरा होगा।" भीमसेन ने समझाया।

हनुमान भीम के घमण्ड पर मुस्कुराते हुए बोला—"भाई, मुझे क्यों तंग करते हो? मेरी पूँछ को हटाकर अपने रास्ते चले चाओ।"

भीम लापरवाही से हनुमान की पूँछ पकड़कर उठाने को हुआ, पर वह हिली नहीं। आश्चर्य चकित हो उसने अपने दोनों हाथों से पूँछ को उठाना चाहा, पर वह इस बार भी हिली तक नहीं। इस पर वह लज्जित हो दोनों हाथ जोड़कर बोला—"भाई साहब, मुझे क्षमा करो। तुम कोई सिद्ध पुरुष या गंधर्व हो, मगर साधारण वानर नहीं हो। तुमको कोई आपत्ति न हो तो अपना वृत्तांत सुनाओ। मुझे तुम अपने शिष्य मान लो।"

इस पर हनुमान ने कहा—"भाई, मैं ही हनुमान हूँ। जब वाली और सुग्रीव के

बीच दुश्मनी बढ़ी तब सुग्रीव ने मेरी सहायता माँगी और मुझ से मित्रता की।" इसके बाद रामायण की वह सारी कहानी सुनाकर अंत में बोला–"मैं यहीं पर रहता हूँ। यहाँ पर प्रति दिन गंधर्व और विद्याधर राम की कथा को गीतों के रूप में गाया करते हैं। मैं उस कथा को सुनकर प्रसन्न रहा करता हूँ। यह प्रदेश मनुष्यों के प्रवेश करने योग्य नहीं है। तुम किस लिए आये हो?"

भीमसेन ने हनुमानजी के चरणों पर गिरकर साष्टांग प्रणाम किया, तब बोला– "महात्मा, आज आपके दर्शन कर मेरा जन्म सार्थक हो गया है। समुद्र पार करते समय आपका रूप कैसा था? उस रूप के दर्शन देकर मुझे धन्य बनाओ।"

"उस दिन का रूप आज दर्शाना मेरे लिए कैसे संभव है, भाई? समय के साथ सब-कुछ बदलता जो है?" हनुमान ने उत्तर दिया।

फिर भी भीमसेन हठ करने लगा। तब हनुमान ने अपने शरीर को भयंकर रूप से विशाल बनाया। वह शरीर सारे केले के वन में व्याप्त हो सूर्य की भाँति चमकते ऐसे लगता था मानों आसमान को छू रहा हो! हनुमान की आँखें अंगारों जैसे थीं। भौंहें तनी हुई थीं। पूंछ फैलकर ज़मीन पर प्रहार कर रही थी।

भीमसेन को चकित देख हनुमान बोला–"भाई, तुमने मेरे रूप को देखा है न? ज़रूरत पड़ने पर मैं अपने शरीर को और फैला सकता हूँ। दुश्मनों के सामने तो मेरा रूप और भयंकर होता है। तुम उस रूप को देख नहीं सकोगे।"

"महात्मा, मैं इस रूप को ही देख नहीं पा रहा हूँ। मेरी आँखें चकरा रही हैं। इसलिए पूर्व रूप में आ जाओ।" भीमसेन ने हनुमान से विनती की।

हनुमान ने अपने साधारण रूप को धारण कर भीम से गले लगाया, तब

बोला–"भाई, सौगंधिक वन में जानेवाला रास्ता यही है। तुम्हारा शुभ हो। हो आओ। तुम्हें कोई कष्ट हो तो मेरा स्मरण करो। मगर साहस करके सौगंधिक पुष्प मत तोड़ो। देवताओं के साथ झगड़ा होगा।" इस प्रकार भीम को समझाकर हनुमान अंतर्धान हो गया।
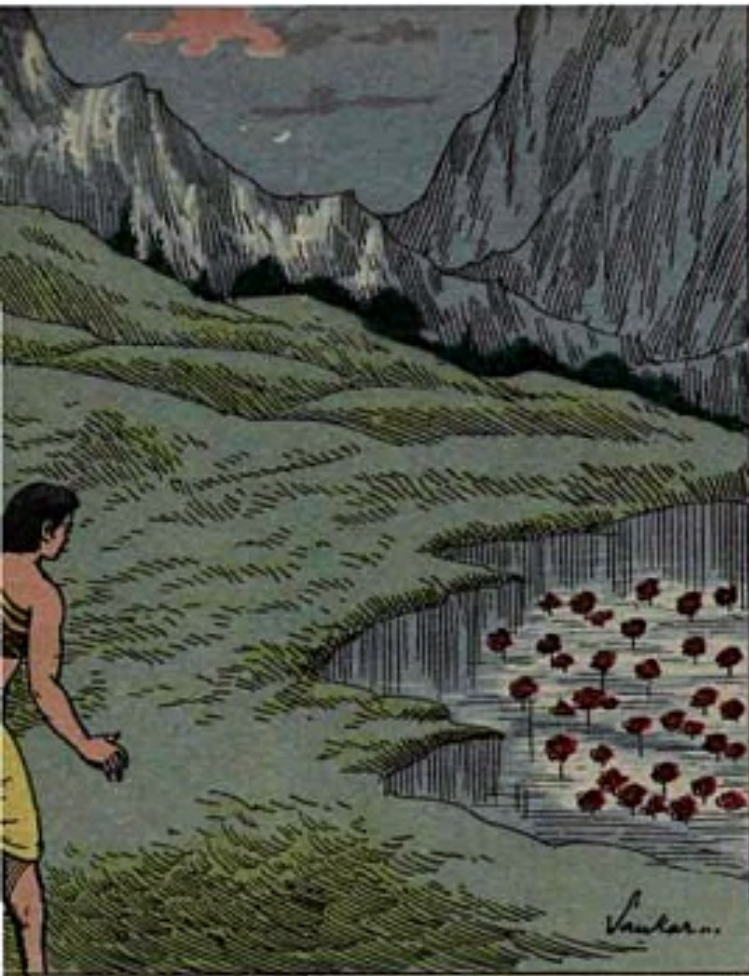
भीम दुगुने उत्साह के साथ आगे बढ़ा। पहाड़ों के बीच बहनेवाली एक नदी के तट पर उसने सौगंधिक पुष्पों का वन देखा। वैडूर्य जैसे नालवाले तरह-तरह के सौगंधिक पुष्प खुशबू को फैलाते सुंदर दिखाई दे रहे थे। द्रौपदी की इच्छा की पूर्ति करने के ख्याल से भीम उन फूलों को तोड़ ही रहा था, तभी भयंकर आकृति वाले राक्षसों जैसे पहरेदार भीम के पास आये और बोले–"अजी, तुम कौन हो? हथियार लेकर यहाँ पर क्यों आये हो?"

"मैं कुरु वंशी राजा पांडु का पुत्र हूँ। युधिष्ठिर का छोटा भाई हूँ। मैं इन पुष्पों को तोड़ लेने आया हूँ।" भीमसेन ने जवाब दिया।

"यह कुबेर का वन है। यहाँ पर मनुष्य प्रवेश नहीं कर सकते। चाहे तो तुम कुबेर की अनुमति लेकर फूल तोड़ लो।" पहरेदारों ने जवाब दिया।

"मैं क्या जानूँ कि कुबेर कहाँ है? क्या चार फूलों के वास्ते मैं उस से भीख माँग लूँ? मैं क्षत्रिय हूँ। मैं जिसकी चाह करता हूँ, उसे अपनी ताक़त के बल पर प्राप्त करना मेरा धर्म है। यह तो कुबेर के महल का पिछवाड़ा नहीं। भगवान की सृष्टि का एक प्रदेश है। यहाँ पर एक की दूसरे से याचना करना ही क्यों?" भीम ने उत्तर दिया और पहरेदारों के मना करते रहने पर भी सरोवर में फूल तोड़ने के लिए उतर पड़ा।

इस पर पहरेदार भीम पर टूट पड़े। भीम ने अपना गदा चलाकर कुछ लोगों को मार डाला। जो लोग बचे, उन लोगों ने जाकर कुबेर को यह घटना सुना दी।

"भीमसेन को फूल तोड़ने दो। मुझे कोई आपत्ति नहीं। तुम लोग उसको मत रोको।" कुबेर ने पहरेदारों को समझाया। पहरेदारों ने लौटकर देखा, तो भीम सौगंधिक पुष्पों को तोड़ते दिखाई दिया।

इस बीच युधिष्ठिर ने भीम को न पाकर द्रौपदी से पूछा—"भीम कहाँ गया है? क्या तुमने उसे कहीं भेज दिया?"

द्रौपदी ने जवाब दिया कि भीम सौगंधिकपुष्प लाने के लिए ईशान की दिशा में गया है। उस वक़्त घटोत्कच अपने दल के साथ आया और पांडवों को उसने भीम के पास पहुँचा दिया। भीम ने द्रौपदी को सौगंधिकपुष्प दिये। पांडव कुबेर की अनुमति पाकर अर्जुन की प्रतीक्षा करते गंधमादनपर्वत पर रह गये। इसके बाद उन सबको घटोत्कच अपने दल की मदद से नर-नारायण आश्रम में छोड़ पांडवों से विदा ले चला गया।

उन दिनों में एक विचित्र घटना घटी। एक दिन जटासुर नामक एक राक्षस द्रौपदी को उठा ले जाने के ख्याल से ब्राह्मण वेष धरकर युधिष्ठिर के पास आया और बोला—"महात्मा, मैं परशुराम का शिष्य हूँ। मैं समस्त प्रकार के शस्त्र और अस्त्रों के प्रयोग सीख चुका हूँ।" युधिष्ठिर ने उसकी बातों पर विश्वास करके उसे अपने साथ रख लिया।

एक दिन भीमसेन कहीं शिकार खेलने गया हुआ था। रोमश, धौम्य तथा अन्य मुनि भी कालकृत्यों के निमित्त आश्रम से दूर चले गये थे। मौक़ा पाकर जटासुर ने पांडवों के सभी आयुध हड़प लिये और बचे हुए तीनों पांडव तथा द्रौपदी को उठाकर भागने लगा। सहदेव किसी न किसी तरह उसके कंधों पर से फिसल गया और उसके हाथ से एक हथियार छीनकर उसका पीछा करने लगा।

युधिष्ठिर ने जटासुर से कहा—"अरे दुष्ट, तुम यह अन्याय क्यों करते हो? अगर तुम में हिम्मत हो तो हमारे हथियार

लौटा कर हम से युद्ध करो। हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? उल्टे हमने तुमको अपना अतिथि बना लिया था?"

सहदेव ने युधिष्ठिर को समझाते हुए कहा–"इस दुष्ट से याचना क्यों करे? यदि हम से बन पड़ा तो इसको मार डालना चाहिए, वरना इसके हाथ में मरना है। इसके सिवाय कोई दूसरा उपाय है ही नहीं।" ये शब्द कहते वह राक्षस पर टूट पड़ा। इतने में भीम कहीं से आ पहुँचा। भीम को देख जटासुर ने युधिष्ठिर, नकुल और द्रौपदी को नीचे उतार दिया और भीम पर हमला बोल दिया। भीम ने जटासुर के साथ मल्लयुद्ध करके उसे कमज़ोर बनाया, आखिर उसे ऊपर उठाकर ज़ोर से नीचे दे मारा। जटासुर चिल्लाते मर गया।

जटासुर के हाथ से बचकर सब आश्रम में लौट आये। अर्जुन अभी तक लौटा न था। उसके गये पाँच साल बीत गये थे। उसका इंतज़ार करते पांडव उस प्रदेश के अन्य पर्वत और आश्रमों को देखते अपने दिन बिताने लगे।

एक दिन चारों पांडव एक स्थान पर बैठ बात कर ही रहे थे कि उसी समय चमकता हुआ एक विमान आसमान से नीचे उतर आया। उस विमान से देवता
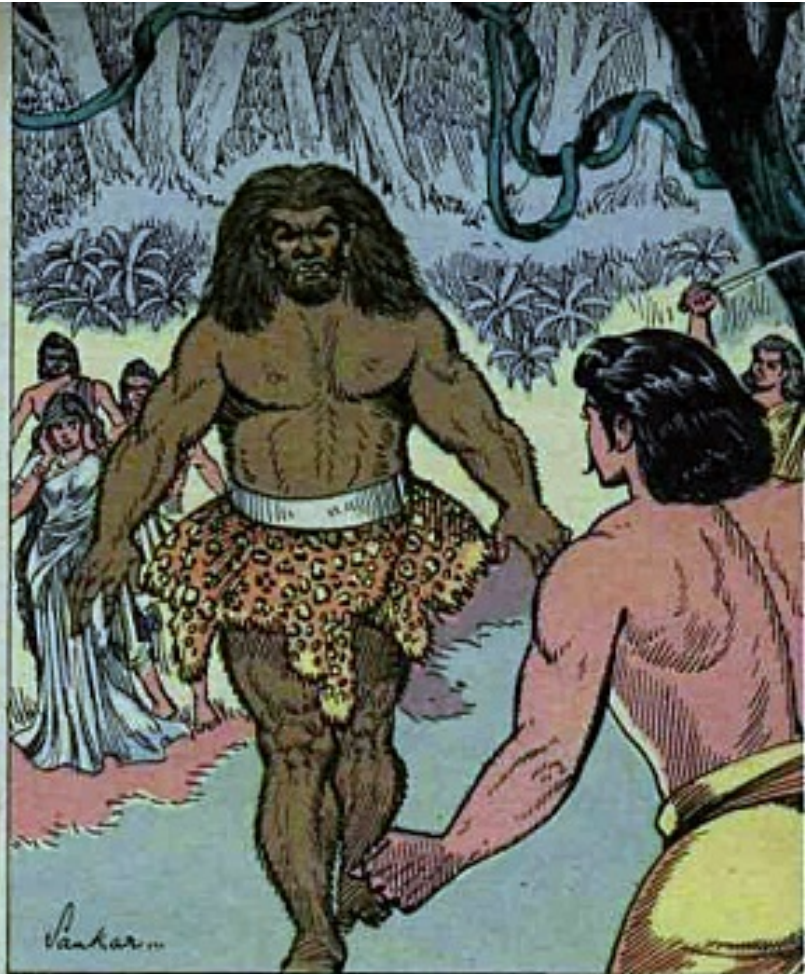
पुरुष के समान अर्जुन उतर पड़ा। इस प्रकार स्वर्ग से लौटते ही अर्जुन ने अपने बड़े भाइयों को प्रणाम किया और छोटे भाइयों को गले लगाया। इसके बाद वह भी उनकी बगल में जा बैठा।

पांडव इन्द्र के रथ और उसके सौंदर्य को अचरज के साथ देखने लगे। उसके सारथी मातलि का आदर-सत्कार किया। उसके द्वारा स्वर्ग के समाचार जान लिये। उनके प्रश्नों का उचित रूप में जवाब देकर मातलि इन्द्र के उस रथ को स्वर्ग में वापस ले गया।

इन्द्र ने अर्जुन को अनेक दिव्य वस्त्र एवं आभूषण दिये थे। अर्जुन ने उन

सबको द्रौपदी के हाथ दिये। इसके उपरांत युधिष्ठिर के पास बैठकर स्वर्ग के अपने अनुभवों को यों सुनाने लगा :

"दिति के पुलोमा और कालका नामक दो कन्याएँ थीं। उन दोनों ने ब्रह्मा के प्रति घीर तपस्या करके उनको प्रसन्न किया और यह वरदान प्राप्त किया कि उनकी संतान की देवता और दानवों के द्वारा मृत्यु न हो और हिरण्य नामक महानगर उनका निवास बने। इस कारण पौलोम और कालकेय उस नगर में रहते देवताओं की परवाह न करते थे। मैंने उन राक्षसों को हराकर उस नगर में प्रवेश किया। रथ को आगे बढ़ाना बड़ा कठिन था। क्योंकि रास्ते में राक्षसों की लाशों के ढ़ेर लगे थे। सारे नगर में राक्षस-नारियों का रोदन सुनाई दे रहा था। रथ की गड़गड़ाहट सुनकर वे सब नारियाँ घरों में जा छिपीं। मातलि ने मुझे बताया कि पहले वह नगर देवताओं के अधीन में था और इन्द्र वहाँ पर रहा करते थे। मगर ब्रह्मा के वरदान के कारण राक्षसों ने देवताओं को भगाकर उस पर कब्ज़ा कर लिया। इन्द्र ने ब्रह्मा से पूछा था कि पौलोम तथा कालकेय का वध कैसे किया जाय, इस पर ब्रह्मा ने उन्हें समझाया था कि जो देवता और दानव जाति का व्यक्ति न हो, उसी के द्वारा उनका वध हो सकता है। इसीलिए इन्द्र ने मुझे उस काम पर नियुक्त किया और कालकेयों का वध करने के लिए मुझे दिव्य अस्त्र प्रदान किये।"

दूसरे दिन जब सब लोग कालकृत्यों से निवृत्त हुए तब युधिष्ठिर ने अर्जुन को बुलाकर दिव्य अस्त्रों का परिचय देने का आदेश दिया। अर्जुन देवदत्त नामक शंख से लेकर सारे अस्त्रों का परिचय देने लगा। उसी समय नारद मुनि आ पहुँचा और अर्जुन से बोला–"अर्जुन! इन अस्त्रों का उचित कारण के बिना कभी प्रयोग न करो। इससे खतरा पैदा हो सकता है। जब तुम युद्ध में इनका प्रयोग करोगे तब मैं देखूँगा ही।" ये शब्द कहकर नारद मुनि वहाँ से चला गया।

शिवपुराण

[८]

नारद के आदेशानुसार पार्वती अपनी सखियों को साथ ले श्रृंगतीर्थ में चली गयी और पंचाक्षरी महामंत्र का जाप करते घोर तपस्या करने लगी। वह एक भी पत्ता खाये बिना तपस्या करने लगी। इसे देख वहाँ के मुनियों ने उसे "अपर्णा" नाम से पुकारना शुरू किया।

एक दिन मेनका और हिमवान अपनी पुत्री को देखने आये। पार्वती को बहुत ही कमजोर देख डर गये और बोले–"बेटी, तुम खाना तक छोड़कर यह घोर तप क्यों कर रही हो? कामदेव को शिवजी ने भस्म किया तो क्या वे तुम्हारे प्रति अनुग्रह करेंगे? वे तो विरागी और क्रोधी हैं, जो फल प्राप्त न होनेवाला है उसके लिए हाथ क्यों फैलाती हो? घर चली आओ।"

पार्वती ने कहा–"आपने शिवजी के साथ मेरा विवाह करने की बात नहीं बतायी? मैं अपनी तपस्या के बल पर उनको आपका दामाद बनाऊँगी! आप मेरी चिंता न करके घर लौट जाइये।"

इस बीच शिवजी यह सोचकर व्याकुल होने लगे कि पार्वती के साथ विवाह कैसे करें? उस वक़्त ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र इत्यादि शिवजी के पास गये। उनका आदर-सत्कार पाकर बोले–"महेश्वर, तुम पार्वती के साथ विवाह करके जगत का कल्याण क्यों नहीं करते? तारक ने यह वरदान प्राप्त किया है कि तुम्हारे पुत्र के द्वारा छोड़ दूसरों के द्वारा उसकी मृत्यु न होगी। उसके मरने पर ही जगत का कल्याण होगा।"

अंतिम पृष्ठ का चित्र

ये बातें सुनकर शिवजी मन ही मन खुश हुये, पर प्रकट रूप में बोले–"विवाह करने पर तप में बाधा पड़ेगी। कामदेव को जीता जा सकता है, मगर नारियों की दृष्टि रूपी बाणों से बचना कठिन है। मैं सोचता हूँ कि पार्वती के साथ गृहस्थाश्रम चलाने के बदले तपस्या करना ही उत्तम है।" इस पर ब्रह्मा इत्यादि ने समझाया कि गृहस्थाश्रम ही सबसे उत्तम आश्रम है। जिसके पत्नी नहीं होती, उसका कोई आदर नहीं करता। अलावा इसके गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए तपस्या करके राजयोगी का जीवन बिताने पर जगत का कल्याण हो सकता है।

शिवजी ने ब्रह्मा इत्यादि के कहे अनुसार करने का वचन दे उन्हें भेज दिया। शिवजी पार्वती के विरह से पीड़ित थे, फिर भी उनका हृदय जानने का संकल्प लिया। इसलिए वे एक वृद्ध यति का रूप धरकर दण्ड और कमण्डलु लिये पार्वती के पास पहुँचे। पार्वती ने उस यति के मुख पर तेज देख सोचा कि ये ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर में से कोई एक होंगे। यह सोचकर यति की पूजा की, उनका स्वागत करके पूछा–"आप कौन हैं? यहाँ पर क्यों आये हैं?"

"मैं ब्रह्म वंशी हूँ। जगत के कल्याण के विचार से सर्वत्र घूमा करता हूँ। तुम किसकी पुत्री हो? किसके वास्ते यह

कठोर तप कर रही हो?" शिवजी ने पार्वती से पूछा।

पार्वती ने यति को उत्तर दिया–"मैं मेनका और हिमवान की पुत्री हूँ। पार्वती मेरा नाम है। ईश्वर जब कैलास में तप कर रहे थे, तब मैं उनकी परिचर्या करती थी। लेकिन एक दिन कामदेव ने उन पर अपने पंचबाण चलाये। इस पर क्रुद्ध हो शिवजी ने उसे अपने तीसरे नेत्र की अग्नि से भस्म किया। इसके बाद नारद ने मुझे पंचाक्षरी मंत्र का उपदेश दिया, मैं उस मंत्र का जाप करते शिवजी को पति के रूप में पाने के लिए यहाँ पर तपस्या कर रही हूँ। इतनी घोर तपस्या करने पर भी मुझ पर शिवजी का अनुग्रह नहीं हुआ है। इसलिए अग्नि में प्रवेश करके मैं अपनी देह को त्यागना चाहती हूँ।"

इस पर शिवजी ने पार्वती से कहा–"तुम बड़ी भूल कर रही हो। ईश्वर तो विरागी हैं। तप करनेवाले हैं। तुम अपनी तपस्या के द्वारा लोकों की हानि क्यों करना चाहती हो? इससे अच्छा यह है कि घर लौट जाओ और किसी एक देवता के साथ विवाह करके सुखी रहो।"

"अब आप जा सकते हैं! मैं अपने विचार को बदलना नहीं चाहती।" पार्वती ने खीझ कर जवाब दिया।

"अच्छा, मैं तो जाऊँगा ही, लेकिन जाने के पहले तुमको समझाना चाहता हूँ। शिवजी दरिद्र हैं। रेशमी वस्त्र नहीं

पहनते। चमड़े धारण करते हैं। बैल को छोड़ कोई अच्छा वाहन भी उन्हें नहीं हैं। भूत और प्रेतों को साथ ले घूमा करते हैं। शरीर पर चन्दन नहीं लगाते, बल्कि राख मलते हैं। उनके साथ विवाह करके तुम क्या सुख भोगोगी?" शिवजी ने कहा।

पार्वती को उन पर क्रोध आया। वह गरज कर बोली—"तुम तो चोर यति हो! मैं भ्रम में पड़ गयी थी कि तुम ज्ञानी हो। शिवजी समस्त प्रकार के ऐश्वर्य रखते हैं, जो शिवजी की निन्दा करता है, वह सात जन्मों तक दरिद्रता को भोगता है।"

शिवजी ने हँसकर कहा—"पार्वती, मैं ही शिव हूँ। तुम्हारा हृदय जानने के लिए यति का वेष धारण कर आया हूँ। मैं तुम्हारे विरह में पीड़ा का अनुभव करता हूँ। तुम मेरे साथ कैलास में आ जाओ।" इन शब्दों के साथ शिवजी ने पार्वती का हाथ पकड़ लिया।

पार्वती ने झटका देकर शिवजी के हाथ से अपने हाथ को छुड़ाकर देखा तो उसकी आँखों को असली शिवजी दिखाई दिये। इस पर उनसे क्षमा मांगकर पार्वती बोली—"इस रूप में आपके साथ जाना उचित नहीं। आप मेरे माता-पिता की अनुमति लेकर मुझ से विवाह करके अपने साथ ले जाइये।"

इसके बाद शिवजी को प्रणाम करके अपनी परिचारिकाओं के साथ घर लौट गयी। मेनका और हिमवान पार्वती के मुँह से ये बातें सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। तब पार्वती के विवाह का मुहूर्त निर्णय करके विवाह की तैयारियाँ करने लगे।

शिवजी भी कैलास लौट गये। वहाँ पर प्रमथ गणों को उन्होंने समझाया कि कैसे कामदेव ने उन पर पंचबाण चलाये। पार्वती पर उनका मन कैसे लगा? तब अपना निर्णय भी सुनाया कि वे पार्वती के साथ विवाह करना चाहते हैं, अतः इस कार्य को संपन्न करने के लिए सप्त ऋषियों का सहयोग चाहिये। तुरंत नंदीश्वर चल पड़ा। सप्त ऋषियों को साथ ले शीघ्र ही वह कैलास को लौट आया।

११८. पन्ने का बौद्ध मंदिर

बांगकाक (सयाम) नगर में तीन सौ से अधिक मंदिर हैं। उन समस्त शिल्पों तथा सुन्दरता में भी पन्ने से निर्मित बुद्ध का मंदिर अत्युत्तम है। यह राजवंश से संबंधित मंदिर है और राजमहल के प्रांगण में है। राजवंशियों की आराधना चिरकाल से यहीं होती आ रही है।

Photo by D. N. Shirke
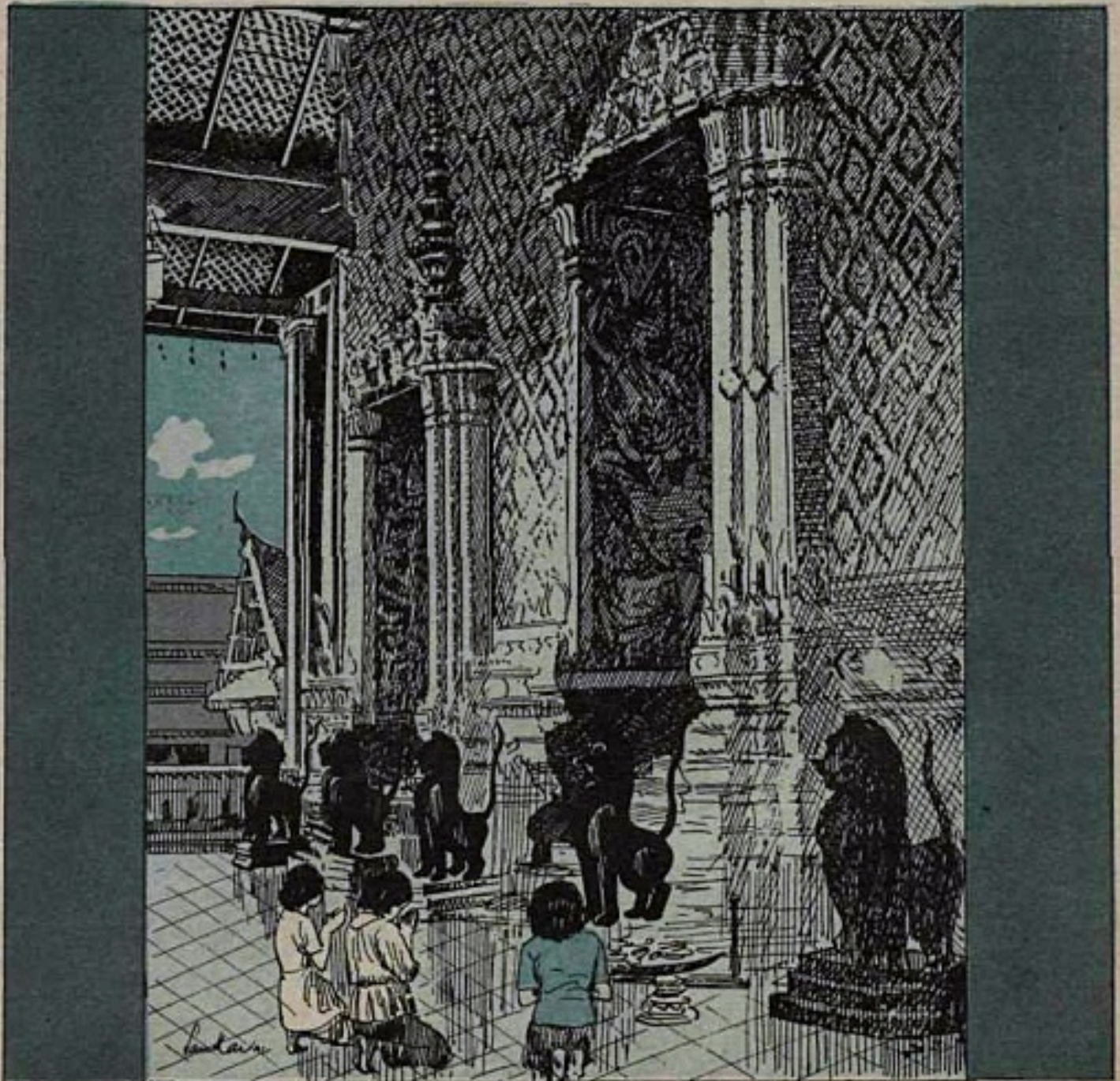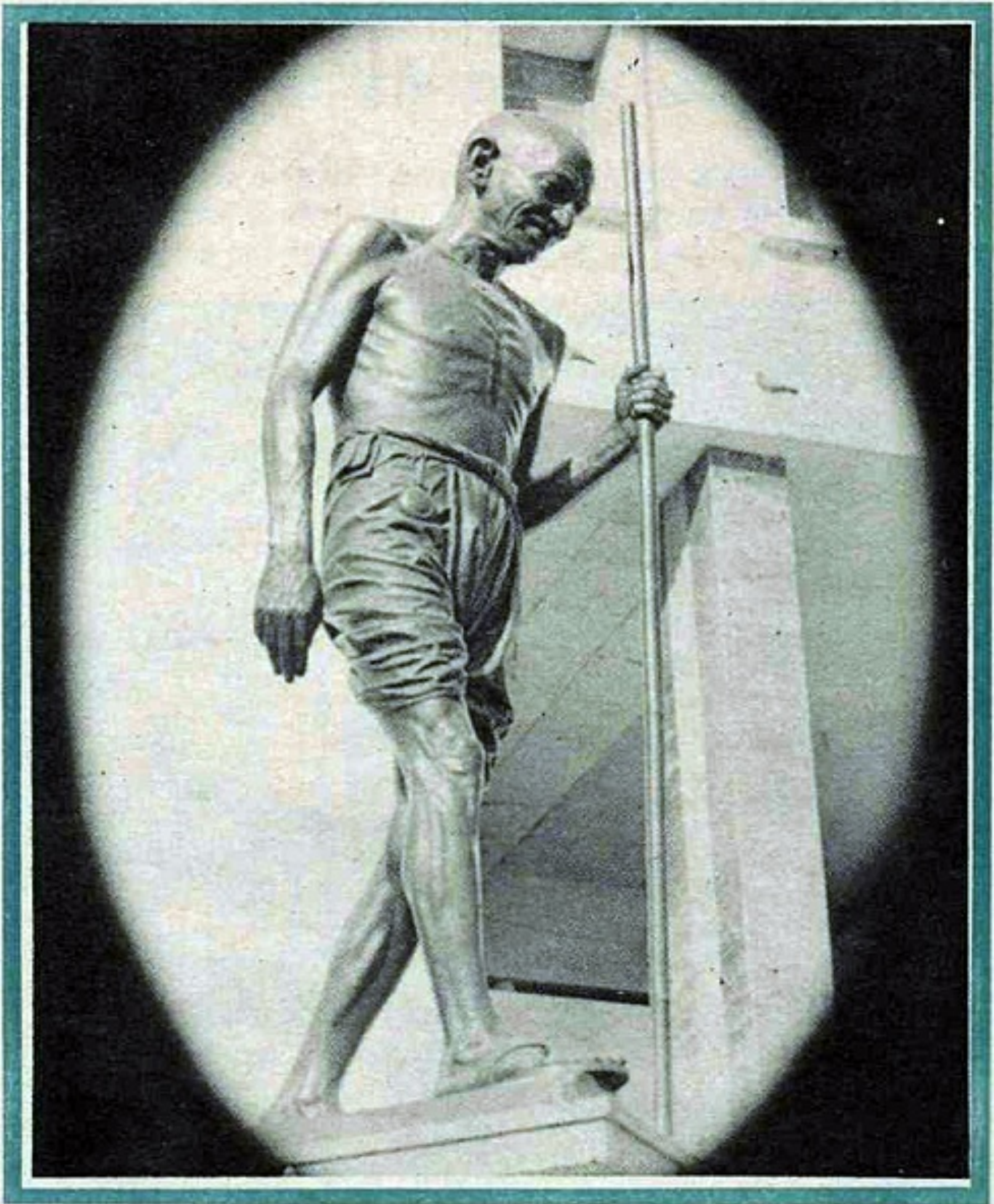
पुरस्कृत परिचयोक्ति

ज्योत से ज्योत जलाते चलो।

प्रेषक : उमाशंकर त्रिपाठी,

Photo by D. N. Shirke
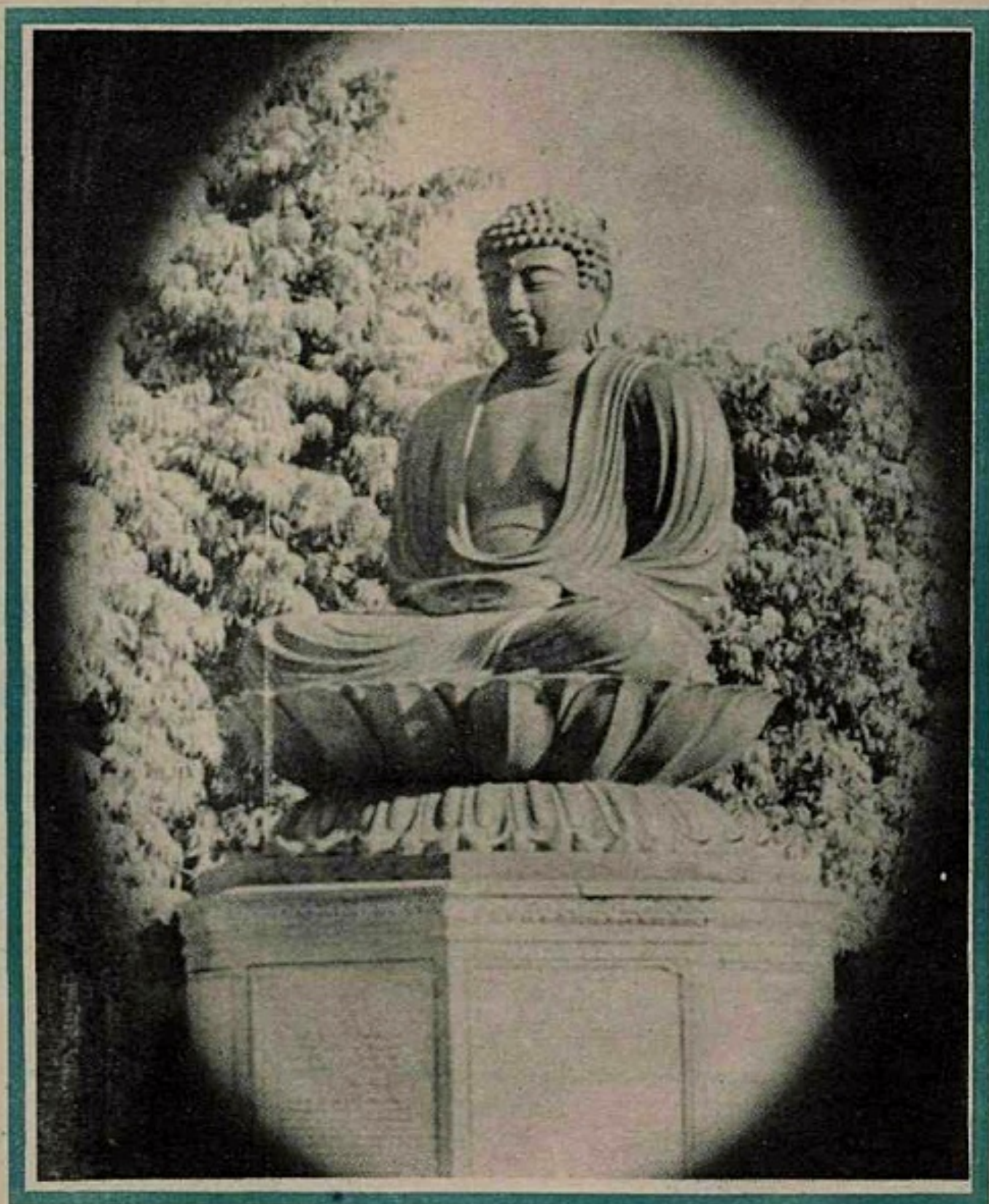
१, सच्चिबुलवार्ड
बिस्टुपुर, जमशेडपुर - १

प्रेम की गंगा बहाते चलो

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★

★ परिचयोक्तियाँ अक्तूबर ५ तक प्राप्त होनी चाहिए।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ दिसंबर के अंक में प्रकाशित की जायंगी!

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

सच्चा झूठ	....	३	क़िस्मत	....	४१
वनदेवी	....	५	दो ज्योतिषी	....	४३
शिलारथ - १२	....	९	मूकप्रेम	....	४७
सपने का असर	....	१७	महाभारत	....	४९
सज्जनता का दण्ड	....	२२	शिवपुराण	....	५७
अपूर्व सुंदरी	....	२९	संसार के आश्चर्य	....	६१

दूसरा मुखपृष्ठ
खरगोश

तीसरा मुखपृष्ठ
चीता

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

Chiclets
Chiclets
Chiclets
Chiclets
Chiclets
Chiclets

बरसात का मुकाबला कीजिये, फ़ॉस्फ़ोमिन® से ताकत लेकर।

वर्षा हल्की हो या मूसलाधार—फ़ॉस्फ़ोमिन के लगातार इस्तेमाल से जिन्दगी में आनन्द आ जाता है क्योंकि फ़ॉस्फ़ोमिन आपको नयी शक्ति प्रदान करता है, आपकी भूख बढ़ाता है तथा आपके शरीर को रोगों का मुकाबला करने के योग्य बनाता है।

तरोताज़गी और शक्ति के लिये फ़ॉस्फ़ोमिन लीजिये—यह एक हरे रंग का, फलों के स्वादवाला टॉनिक है जो बी-कॉम्पलैक्स विटामिनों और विविध ग्लिसरोफ़ॉस्फेट्स का सम्मिश्रण है। अपने परिवार को, बीमारियों से दूर तथा स्वस्थ रखने के लिये, प्रतिदिन फ़ॉस्फ़ोमिन दीजिये। सब मौसमों के लिए—शक्तिदायक विटामिन टॉनिक फ़ॉस्फ़ोमिन।

SQUIBB

Sarabhai Chemicals

® ई.आर. स्क्विब एण्ड सन्स इन्को. का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है जिसके अनुज्ञात उपयोग कर्ता हैं—के.पी.पी.एल.

पूरे परिवार के स्वास्थ्य के लिये—फ़ॉस्फ़ोमिन

Shilpi/HPMA 14A/71 Hin